श्री पंचकल्याणक

विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार

प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

नवग्रह शांति जिनालय जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
महामस्तकाभिषेक महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ,
48 दिवसीय शांति विधान के उपलक्ष्य में प्रकाशित

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

पंचकल्याणक विधान मांडला

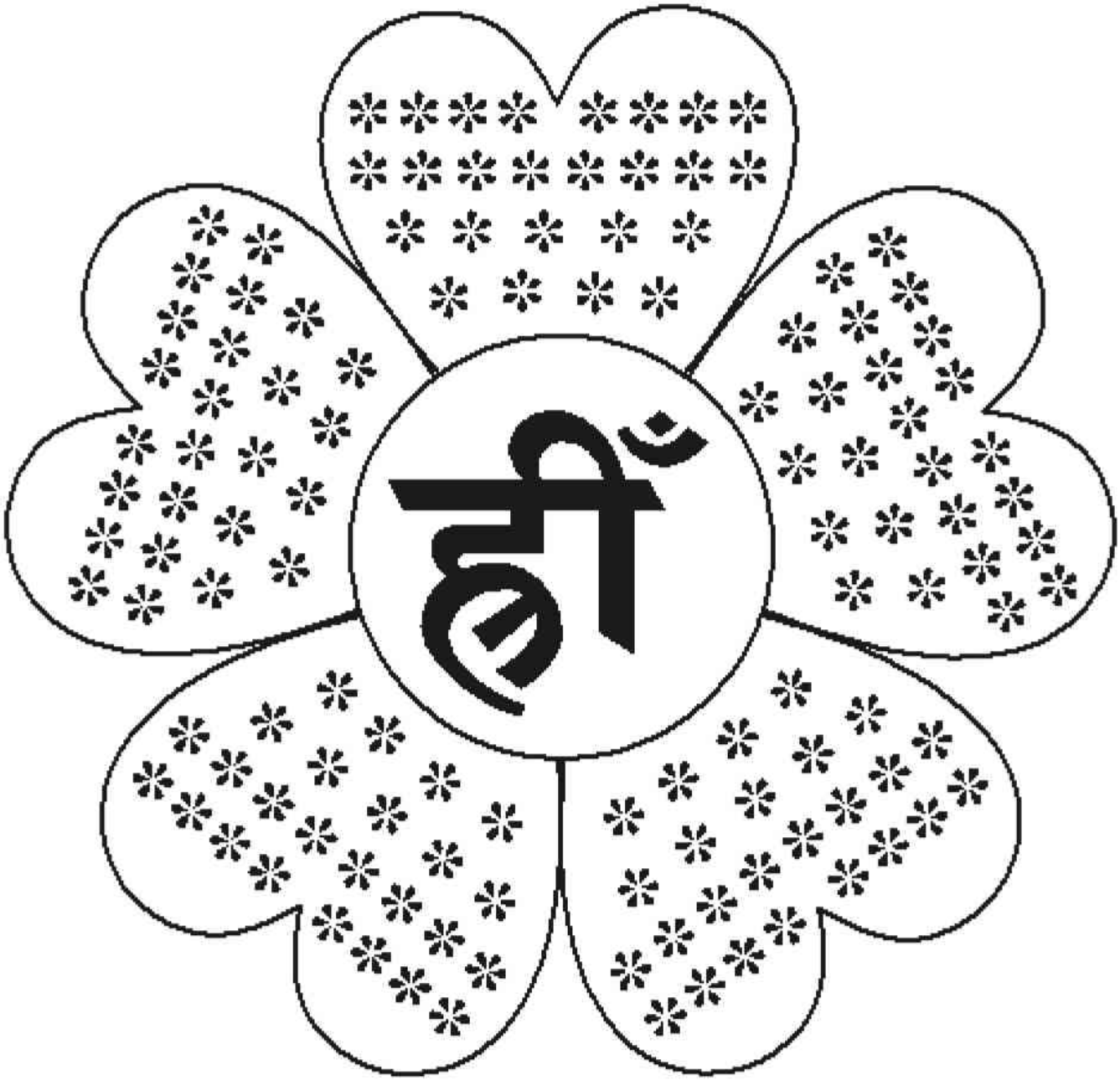

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– **रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे।।

3

2 卐 24

5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ।।1।।

केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार।।2।।

धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास।।3।।

कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल।।4।।

चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष।।5।।

प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय।।6।।

हलधर बलधर चक्र धर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार॥7॥

बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार॥8॥

हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग-द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान॥9॥

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म॥10॥

चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश॥11॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें।।1।।

सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो।।2।।

अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी।।3।।

महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता।।4।।

परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन-वच-काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता।।5।।

अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी।।6।।

जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता।।7।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो॥
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को॥1॥

त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥2॥

अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है॥
त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है॥3॥

पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है॥
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है॥4॥

अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है॥

प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥

सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥

पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥

विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥

कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥

नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥2॥

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥3॥

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥4॥

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥5॥

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥6॥

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥7॥

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥8॥

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥9॥

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥10॥

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज– हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों।।
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा।।
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन–माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म–जरा–मृत हरता हूँ।।
देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना।। देव शास्त्र..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ।। देव शास्त्र..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ।।
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।4।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया।। देव शास्त्र..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा।। देव शास्त्र..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ।। देव शास्त्र..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है।। देव शास्त्र..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है।। देव शास्त्र..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोडूँ सब अभिमान।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नम: स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय–जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर–नार।।

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ।।
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ।।1।।

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ।।
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि–सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले।।2।।

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत–शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन।।
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन।।3।।

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता।।

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन।।7।।

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा

रचनाकार–आचार्य गुप्तिनंदीजी

(गीता छन्द)

वृषभादि से वीरान्त तक है सर्व जिन की अर्चना।
हरती हमारे पाप तम और क्लेश की सब वंचना।।
त्रय रत्न गुणधर तीर्थकर की पुष्प लेकर थापना।
प्रभु का परम सान्निध्य पा हम दु:ख मिटाये आपना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ:–ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अडिल्ल छन्द)

निर्मल जल हम कंचन झारी में भरें।
जिनवर के चरणों में त्रय धारा करें।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दन सम शीतल चन्दन अर्पण करें।
जिनवर की अर्चा भव का वर्तन हरे।। जिन शासन...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता और अक्षत मुष्ठि में भर लिये।
अक्षय सुखदाता को अर्पण कर दिये।। जिन शासन...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अम्बुज भूमिज मनहर सुरभित सुमन से।
मदनजयी को पूजे निज मन्मथ नशे।। जिन शासन...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर प्रासुक व्यञ्जन से अर्चना।
परम कृपालु हरें क्षुधा की वंचना।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर दीपों से करते आरती।
जिनवर वाणी केवल दीप उजालती।। जिन शासन...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हितकर मनहर धूप चढ़ायें नाथ को।
कर्म विनाशन हेतु झुकायें माथ को।। जिन शासन...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर केला आदि फल ला रहे।
मुक्ति फल दाता के चरण चढ़ा रहे।। जिन शासन...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फल आदि अर्घ बनाये भाव से।
अनर्घ पद हित भक्ति रचायें चाव से।। जिन शासन...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रभु को लख प्रमुदित हुआ, मन में हर्ष अपार।
तन मन को शांति मिले, करता शांतिधार।।

शांतये शांतिधारा...

प्रभु चरणों के पास में, अर्पित करते हार।
संयम के सौरभ खिले, पायें शिवपुर द्वार।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्....

जाप्य मन्त्र-ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा – आदिनाथ से वीर तक चौबीसों भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें होवें सिद्ध समान।।

चौपाई

वृषभ धर्म वृषभेश बतायें, अजित कर्म अरि पर जय पायें।
संभव भव का भ्रमण छुड़ायें, अभिनंदन सुरवंद्य कहाये।।1।।

सुमति जिनेश सुमति के दाता, चित्त पद्म के पद्म विधाता।
श्री सुपार्श्व भव पाश हरेंगे, 'चन्द्र' चित्त में वास करेंगे।।2।।

पुष्पदंत को पुष्प चढ़ायें, शीतल अंतस्तल बस जायें।
श्री श्रेयांस श्रेय के दाता, वासुपूज्य वसु कर्म विघाता।।3।।

विमल कर्म मल दूर भगायें, जिन अनंत शक्ति प्रगटायें।
धर्मनाथ दशधर्म सिखायें, शांति जगत में शांती लायें।।4।।

कुंथु से कुंथ्वादिक रक्षा, अरहनाथ की श्रेष्ठ विवक्षा।
मल्लि कर्म मल्लों को जीते, मुनि सुव्रत व्रत अमृत पीते।।5।।

नमि को नमे सकल नर नारी, नेमि तजे राजुल सुकुमारी।
पारस के हम पार्श्व रहेंगे, वर्द्धमान को नमन करेंगे।।6।।

चौबीसों तीर्थेश हमारे, पंचकल्याणक जिनके न्यारे।
'गुप्तिनंदी' प्रभु के गुण गाये, तीन गुप्ति धर शिव सुख पाये।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

चौबीसों जिनदेव को, वंदन बारम्बार।
उनकी पूजा भक्ति से, मिले मोक्ष प्राकार।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री नवदेवता पूजन

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

(शंभु छन्द)

अरिहंत सिद्ध सूरी पाठक साधू परमेष्ठी गुणधारी।
जिनधर्म जिनागम चैत्य जिनालय सबके मन को सुखकारी।।
इन नवदेवों का आह्वानन कर ग्रह अरिष्ट का नाश करें।
तव गुण मन में धारण करके हम मोक्षपुरी में वास करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालय समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पावन चरणों में हे प्रभुवर ! पावन जल भर कर लाया हूँ।
तव वीतराग मुद्रा लखकर मैं मन में अति हर्षाया हूँ।।
अरिहंत सिद्ध सूरी पाठक साधू को नमन हमारा है।
जिनधर्म जिनागम चैत्य जिनालय लगता सबको प्यारा है।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

भव-भाव अभाव हमारा हो यह भाव संजोकर आया हूँ।
चंदन सम शीतलता पाने मैं चंदन घिसकर लाया हूँ।। अरिहंत...।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... भवआतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षयपद की अभिलाषा से अक्षत का पुंज चढ़ाता हूँ।
भौतिकपद शिवपद मिलता है यह जान शरण में आता हूँ।। अरिहंत...।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

अध्यात्म सुमन की सुरभि से जीवन उपवन बन जाता है।
जल-भूमिज सुमन लिए पूजक आगम युत भक्ति रचाता है।। अरिहंत...।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

इस क्षुधा-तृषा की बाधा से जीवन में मैं अति अकुलाया।
अतएव सरस प्रासुक व्यंजन भक्तिरस से भरकर लाया।। अरिहंत...।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5 ।।

अज्ञानभाव ही प्राणी को गति चार भ्रमण करवाता है।
सुज्ञान दीप की आरति से मिथ्यात्व मोह भग जाता है।।
अरिहंत सिद्ध सूरी पाठक साधू को नमन हमारा है।
जिनधर्म जिनागम चैत्य जिनालय लगता सबको प्यारा है।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6 ।।

तन-मन के रोग नशाने को कृष्णागुरु धूप चढ़ाता हूँ।
मैं कर्म बेड़ियाँ तोड़ सकूँ आशीष आपसे पाता हूँ।। अरिहंत...।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7 ।।

ताजे मीठे रसयुक्त सुफल जिनपूजन से अतिफल देते।
वटवृक्ष बीज सम पुण्य सहित शिवलक्ष्मी सा प्रतिफल देते।। अरिहंत...।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8 ।।

जल-चंदन आदिक अर्घ मिला पूजन की थाली लाया हूँ।
मैं पद अनर्घ को प्राप्त करूँ यह भाव हृदय भर लाया हूँ।। अरिहंत...।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत... अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9 ।।

दोहा : **त्रय धारा जल की करूँ, आत्म शांति के हेत।**
श्री जिनवर का दास बन, पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

शांतये शांतिधारा....दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागमजिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : **नवदेवों की अर्चना, करो भक्त त्रयकाल।**
गुण निधि पाने के लिए, गाओ प्रभु जयमाल।।

चौपाई

चार घातिया नाश किया है, गुणअनंत में वास किया है।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, परमौदारिक तन के वेषी।। 1 ।।

समोशरण की महिमा न्यारी, आये देव-पशु नर-नारी।
अरिहंतों के गुण हम गायें, भक्तिभाव से शीश झुकायें।।2।।
अष्ट कर्म बंधन को तोड़ा, निज स्वरूप से नाता जोड़ा।
तीन लोक के हो परमेश्वर, राजे लोक शिखर के ऊपर ।।3।।
सिद्धप्रभु की पूजन कर लो, आधि-व्याधि विपदायें हर लो।
पंचाचारी आत्म विहारी, शिष्यगणों के संकटहारी।।4।।
दीक्षा देते पार लगाते, आत्मगुणों को जो विकसाते।
गुप्तित्रय का पालन करते, क्षमाभाव जो मन में धरते।।5।।
पठन और पाठन करवाते, उपाध्याय गुरुवर कहलाते।
रत्नत्रय को धारण करते, ज्ञान-ध्यान में रत जो रहते।।6।।
आठ बीस गुण पालन करते, विष समान विषयों को तजते।
प्राणी मात्र की रक्षा करता, जैनधर्म सबका दुःख हरता।।7।।
श्री जिनवर ने इसे बताया, जैनधर्म जिससे कहलाया।
श्री जिनमुख से वाणी खिरती, द्वादशांग का रूप जो धरती।।8।।
अनेकांतमय रूप निराला, स्याद्वाद है जग में आला।
वीतराग प्रतिमा सुखकारी, नासादृष्टि लगती प्यारी।।9।।
पद्मासन खड्गासन धारी, जिनप्रतिमायें मंगलकारी।
कोटा-कोटी अशन समाना, जिनदर्शन का सुफल बखाना।।10।।
समोशरण की याद दिलाता, वो चैत्यालय है कहलाता।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय हैं, भक्त भक्ति में होते लय हैं।।11।।
नवदेवों का पूजन-दर्शन, हर लेता नवग्रह का बंधन।
'राजश्री' नित इनको ध्याये, ध्याते-ध्याते शिवपुर जाये।।12।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंतसिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा : तारण-तरण जिहाज, इनकी भक्ति मैं करूँ।
पाऊँ शिवपुर 'राज', अक्षयसुख निश्चय वरूँ।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो सव्व साहूणं

(णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।)

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

पंचकल्याणक व्रत कथा

व्रत विधि– चैत्र आदि 12 महीनों में शुक्ल व कृष्ण पक्ष में चौबीस तीर्थंकरों के गर्भ, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और मोक्ष की जो–जो तिथि हो उस दिन उपवास करना। उपवास के पहले दिन एकाशन करना चाहिए। उस दिन शुद्ध कपड़े पहनकर अष्ट द्रव्य लेकर मन्दिर जाना चाहिए। पीठ (वेदी) पर जिस भगवान का पञ्चकल्याणक होगा उस प्रतिमा को रखकर अभिषेक करें। जिस समय प्रत्यक्ष पंचकल्याणक हुए थे उस समय सौदर्म इन्द्र खुद अपने चतुर्निकाय के साथ आकर पूजा महोत्सव करके गया था, वह तिथि माननी अत्यन्त सुखकर है। उसी प्रकार अरिहन्त यह मंगल लोगोत्तम व शरण में जाना उचित है। श्रेयकर है। उसी प्रकार से उनके कल्याणक भी मंगल है। इसलिए उस दिन भव्य जीवों को पूजा व सत्पात्र को दान देकर पुण्य सम्पादन करना चाहिए। अष्ट द्रव्य से उनकी पूजा अर्चना करनी चाहिए, श्रुत व गणधर की पूजा करके यक्ष–यक्षी की अर्चना करनी चाहिए।

जाप– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं (यहाँ आगे जिस तीर्थंकर का कल्याणक होगा वही नामदेना) तीर्थंकराय गोमुखयक्ष चक्रेस्वरी यक्षी सहिताय (यहाँ जिस तीर्थंकर के यक्ष–यक्षी होगा वही नाम) नमः स्वाहा। इसका 108 बार जाप करें। णमोकार मंत्र का जाप कर यह कथा पढ़नी चाहिये। जो तीर्थंकर होंगे उनका चितवन, मनन करना। महार्घ्य दे, आरती करनी चाहिये। उस दिन उपवास करके धर्मध्यानपूर्वक दिन बितावे।

इस प्रकार से प्रत्येक मास में जितने कल्याणक आयें उतने ही पूजा, उपवास करें। इस प्रकार 120 कल्याणक के 120 उपवास करें। फिर उसका उद्यापन करें। फिर नया मन्दिर बनाये या नवीन मूर्ति लाकर विराजमान करें। चतुर्विंशति तीर्थंकर प्रतिमा विराजमान कर महाभिषेक करें। विधान करें। चतुर्विध संघ को दान दे। ऐसी इस व्रत की विधि है।

अथवा

प्रथम वर्ष– जिस साल गर्भ कल्याणक की तिथि आयेगी उस दिन उपवास करें।

द्वितीय वर्ष– जिस महीने में जन्म कल्याणक की तिथि आयेगी उस दिन उपवास करना।

तृतीय वर्ष– जिस–जिस महीने में दीक्षा कल्याणक की तिथि आयेगी उस दिन उपवास, पूजा आदि करें।

चतुर्थ वर्ष– जिस–जिस महीने में केवलज्ञान कल्याणक की तिथि होगी उस दिन उपवास करें।

पंचम वर्ष– जिस–जिस महीने में निर्वाण कल्याणक होगा उस दिन उपवास करें।

इस प्रकार से यह व्रत 5 वर्ष यथाविधि करें, फिर पूर्ववत उद्यापन करें।

तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि व्रत विधि

विधि– यह पंचकल्याणक व्रत एक वर्ष में करने से 91 तिथियों में पूर्ण होगा एवं पाँच वर्ष में करने से प्रत्येक वर्ष में क्रम से गर्भकल्याणक की चौबीस तिथियाँ, जन्मकल्याणक की चौबीस तिथियाँ, दीक्षाकल्याणक की चौबीस तिथियाँ, केवलज्ञानकल्याणक की चौबीस तिथियाँ और निर्वाणकल्याणक की चौबीस तिथियाँ की जायेंगी।

इसमें भी पौषकृष्णा एकादशी को चन्द्रप्रभ एवं पार्श्वनाथ के जन्मकल्याणक एक ही तिथि में होने से 23 तिथियाँ ही रहेंगी तथा दीक्षाकल्याणक में श्री चन्द्रप्रभ एवं पार्श्वनाथ की पौष कृष्णा एकादशी की एक ही तिथि होने से 23 तिथियाँ रहेंगी तथा ऐसे ही चैत्र कृष्णा अमावस्या को अनन्तनाथ एवं अरनाथ का निर्वाणकल्याणक होने से 23 ही तिथियाँ रहेंगी।

इस प्रकार तीन तिथियाँ कम हो जाने से 117 दिन में यह व्रत पूर्ण होगा।

नोट– प्रत्येक व्रत के दिनों में उन–उन तीर्थंकरों की पूजा एवं उन तीर्थंकरों के कल्याणकों के मंत्र जपने चाहिए। पंचकल्याणक तिथि दर्पण में मगसिर शुक्ला 11–11 दो बार, फाल्गुन कृ. 7–7 दो बार, फाल्गुन कृ. 11–11 दो बार, चैत्र कृष्णा अमावस्या–अमावस्या दो बार आ गये हैं।

समुच्चय मंत्र– (1) ॐ ह्रीं पंचकल्याणकप्राप्त श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः। अथवा (2) ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकेभ्यो नमः।

पंचकल्याणक तिथियों के पृथक्–पृथक् मंत्र–

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री ऋषभदेवाय नमः॥1॥
ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः॥2॥
ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाष्टम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः॥3॥
ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥4॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णादशम्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥5॥

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः॥6॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लासप्तम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥7॥

श्रावण कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः॥8॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णादशम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः॥9॥

श्रावण शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥10॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥11॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां तपकल्याणकप्राप्ताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥12॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः॥13॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लापूर्णिमायां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः॥14॥

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥15॥

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः॥16॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाषष्ठ्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय नमः॥17॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः॥18॥

आश्विन कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥19॥

आश्विन शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाप्रतिपदायां केवलज्ञानकल्यामकप्राप्ताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥20॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः॥21॥

कार्तिक कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाप्रतिपदि गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमः॥22॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाचतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः॥23॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः॥24॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः॥25॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः॥26॥

कार्तिक शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री पुष्पदन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः॥27॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥28॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वादश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः॥29॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लापूर्णिमायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः॥30॥

मगसिर कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः॥31॥

मगसिर शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रपिपदायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री पुष्पदन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः॥32॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रपिपदायां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री पुष्पदन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः॥33॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लादशम्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः॥34॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥35॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥36॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥37॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः॥38॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लापूर्णिमायां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः॥39॥

पौष कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाद्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥40॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः॥41॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः॥42॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा-एकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः॥43॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा-एकादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः॥44॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाचतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः॥45॥

पौष शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं पौषशुक्लादशम्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥46॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला-एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः॥47॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लाचतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः॥48॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लापूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः॥49॥

माघ कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं माघकृष्णाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः॥50॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः॥51॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः॥52॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री ऋषभदेवाय नमः॥53॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णामावस्यायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः॥54॥

माघ शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः॥55॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः॥56॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः॥57॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाषष्ठ्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः॥58॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लानवम्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः॥59॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लादशम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः॥60॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः॥61॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः॥62॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः॥63॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लात्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः॥64॥

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णातृतीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः॥65॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्थ्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः॥66॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाषष्ठ्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः॥67॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः॥68॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः॥69॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णानवम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय नमः॥70॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय नमः॥71॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः॥72॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः॥73॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचर्तुदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः॥75॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः॥76॥

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लापंचम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥77॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लासप्तम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः॥78॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः॥79॥

चैत्र कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णापंचम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः॥80॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः॥81॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय नमः॥82॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री ऋषभदेव जिनेन्द्राय नमः॥83॥

अथवा

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः॥84॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः॥85॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः॥86॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यायां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः॥87॥

चैत्र शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाप्रतिपदायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥88॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लातृतीयायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः॥89॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापंचम्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः॥90॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाषष्ठ्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः॥91॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥92॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥93॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाएकादश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥94॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः॥95॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लापूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः॥96॥

वैशाख कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः॥97॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णानवम्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः॥98॥
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णादशम्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः॥99॥
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः॥100॥
ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥101॥

वैशाख शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः॥102॥
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः॥103॥
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमः॥104॥
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः॥105॥
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाषष्ठ्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः॥106॥
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लानवम्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥107॥
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः॥108॥
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लात्रयोदश्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः॥109॥

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाषष्ठ्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः॥110॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णादशम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः॥111॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः॥112॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः॥113॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥114॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥115॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः॥116॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा-अमावस्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः॥117॥

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाचतुर्थ्यां निर्वाणकल्याणकप्राप्ताय श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः॥118॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः॥119॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः॥120॥

***

श्री पंचकल्याणक स्तवन

अरहंत सिद्धाचार्य पाठक श्रमण को हम ध्या रहे।
नत शीश हो चौबीस श्री जिनराज के गुण गा रहे।।
जिनदेव के मुख से खिरी जिनवाणी को वन्दन करें।
कृत्रिम अकृत्रिम सर्व जिनबिम्बों का नित अर्चन करें।।1।।

अर्हंत भाषित दिव्य-ध्वनि को, झेलते गणधर प्रभो।
मम सर्व दुःख संकट हरें ऋद्धि-पति मुनिवर विभो।।
इस लोकवर्ती तीन कम नव कोटि मुनि जग वन्द्य हैं।
नव देवता जिनधर्म आदिक् नितप्रति अभिवन्द्य हैं।।2।।

त्रयकाल के चौबीस तीर्थंकर प्रभो सुखकार हैं।
पुनि सम्प्रति पुरुदेव से महावीर जिन अघहार हैं।।
उनके सुमंगल पंचकल्याणक हरें मम पाप को।
उन सब तिथि व तीर्थ को हम पूजते निष्पाप हो।।3।।

यह पंचकल्याणक सुअर्चन, सर्व दुःख हर्तार है।
जो पूजता शुचि भाव से, उसको परम सुखकार है।।
तीर्थंकरों के पंचकल्याणक, हरें मम भव भ्रमण।
निज दीर्घ संचित सर्व कर्म, विनाश हित करते सृजन।।4।।

दोहा

श्री जिन पंचकल्याण ही, करें जगत कल्याण।
'गुप्ति' आत्म कल्याण हित, रचे पुनीत विधान।।

***

श्री पंचकल्याणक पूजा

(शंभु छन्द)

श्री गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-मोक्ष पाँचों कल्याणक के धारी।
इनके गुण कीर्तन वंदन से बनते अतिशय सुख भंडारी।।
मनहर छवि लख मन कुमुद खिला इनका आह्वानन करते हैं।
इनके सम गुण पाने को हम पुष्पांजलि अर्पण करते हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर पंचकल्याणक समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अष्टक-शेर छंद)

जल के घड़ों से नाथ पे त्रयधार हम करें ।
तीर्थेश अर्चना से तीन रोग को हरें ।।
श्री पंचकल्याणक प्रभु का भक्ति से करें ।
हम गान-नृत्य-वंदना से मुक्ति को वरें ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्यनाथ दर्श से क्रंदन भगा दिया।
भवदाह मिटाने उन्हें चंदन चढ़ा दिया।। श्री पंच....।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भर पुँज अक्षतों के चढ़ा मोद मनायें।
अक्षय अनंत गुण निधि को आपसे पायें।। श्री पंच....।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला गुलाब चंपकादी पुष्प सजायें।
श्री कामजेता नाथ को भक्ति से चढ़ायें।। श्री पंच....।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीर्थेश धर्मवैद्य सर्व रोग को हरें।
नैवेद्य चढ़ा हम क्षुधादि रोग को हरें।।
श्री पंचकल्याणक प्रभु का भक्ति से करें ।
हम गान-नृत्य-वंदना से मुक्ति को वरें ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोहान्ध को हरें प्रभो कैवल्यज्योति से।
निजमोह नाश हेतु पूजें दीपज्योति से।। श्री पंच....।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ध्यानाग्नि में प्रभु ने आठों कर्म नशायें।
सुरभित मनोज्ञ धूप उन्हें रोज चढ़ायें।। श्री पंच....।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

मीठे सरस फलों के श्रेष्ठ थाल चढ़ायें।
शिवराह के पथिक बने यह भाव बनायें।। श्री पंच....।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

कल्याणवान ईश को हम अर्घ चढ़ायें।
कल्याण भाव से सदा ही शीश झुकायें।। श्री पंच....।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रमुदित मन से हम करें, पावन शांतिधार।
प्रभु सम पावन बन सकें, हो जायें भव पार।। *शांतये शांतिधारा।*

पुष्पाञ्जलि अर्पण करें, प्रभु चरणों के पास।
जिनवर सा जीवन मिले, करें मोक्ष में वास।। *दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।*

जाप्य मन्त्र- ॐ ह्रीं पंचकल्याणक सहित चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- जयमाला तीर्थेश की, जयकारों के साथ।
पंचकल्याणक ईश को, झुका रहे हम माथ।।

(तर्ज–धीरे–धीरे बोल कोई...)

आओ मिलकर सब आयें, प्रभु की जयमाला गायें।
हम भक्ति नृत्य रचा रहे, शुभ मंगल वाद्य बजा रहे।।
जिनमाता का अतिशय पुण्य महान, गर्भ में आये तीर्थंकर भगवान्।
नगरी में बरसे हैं रत्न अपार, तीन लोक में शांति अपरम्पार।।
वंदन करें, कीर्त्तन करें–2, ... हम भक्ति...
जब जन्मे थे जग के तारणहार, सबके मन में खुशियों की भरमार।
पांडुक गिरी पर न्हवन हुआ मनहार, जन्म महोत्सव प्रभु का मंगलकार।।
तबला बजा, ढ़ोलक बजा–2, ... हम भक्ति...
बन वैरागी चले स्वयंभूनाथ, पंचमुष्टि से लोंच करें निज हाथ।
बने दिगम्बर सारे अम्बर त्याग, पंचमहाव्रत से करते अनुराग।।
गरबा रचा, बाजे बजा–2, ... हम भक्ति...
शुक्ल ध्यान धर पायें केवलज्ञान, दिव्यध्वनि झेलें गणधर भगवान।
समोशरण में आये पशु नर नार, पायें व्रत संयम का शुभ उपहार।।
अर्चन करें, पूजन करें–2, ... हम भक्ति...
केवलज्ञानी नाशे कर्मन् आठ, शिवनगरी के बने प्रभु सम्राट।
नख केशों का कर अंतिम संस्कार, देव मनायें मोक्ष दिवस त्यौहार।।
झांझर बजा, घुंघरूँ बजा–2
'गुप्तिनंदी' गुप्ति धरें, यह अरज प्रभु तुम से करे।। आओ...

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर पंचकल्याणकेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

श्री पंचकल्याणक महोत्सव भक्ति से हम सब करें।
कल्याण की शुभ भावना से नृत्य वंदन हम करें।।
तीर्थंकरों की चरण रज मिलती रहे यह भावना।
मुझ 'गुप्तिनंदी' की रहे शिवराज की शुभकामना।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गर्भकल्याणक पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

श्री तीर्थंकर त्रिभुवन पति जब, माता के उर आते हैं।
जिन माता-दिन-गर्भतिथी, भक्तों से पूजे जाते हैं।।
गर्भ कल्याणक काल सुमंगल, उनका ध्यान लगाता हूँ।
आह्वानन थापन सन्निधि हित, सुरभित पुष्प चढ़ाता हूँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर गर्भकल्याणक समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ:-ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक (चामर छंद)

हेम कुम्भ नीर से भरे त्रिधार मैं करूँ।
जन्म आदि तीन रोग नाश शर्म को वरूँ।।
तीर्थनाथ-तीर्थमात की करूँ शुभार्चना।
अष्ट द्रव्य से करूँ सुगर्भ पर्व वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर गर्भकल्याणकेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप ताप नाश हेत गंध चर्ण चर्चता।
शुद्ध गर्भ वास देव आपको हि अर्चता।। तीर्थनाथ...।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर गर्भकल्याणकेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शालि पुञ्ज ले अखण्ड देव को चढ़ा रहा।
नाथ का अखण्ड सौख्य आत्म को लुभा रहा।। तीर्थनाथ...।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर गर्भकल्याणकेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर भूमि में उगे सजाय पुष्प चाव से।
काम भी अकाम हो विनीत होय भाव से।। तीर्थनाथ...।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर गर्भकल्याणकेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्वेत-पीत वा अनेक वर्ण की मिठाइयाँ।
आत्म सौख्य लाभ हेत नाथ को चढ़ा दिया।।
तीर्थनाथ-तीर्थमात की करूँ शुभार्चना।
अष्ट द्रव्य से करूँ सुगर्भ पर्व वंदना।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर गर्भकल्याणकेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न आदि के अनेक दीप थाल में सजा।
दीप अर्चना करें अशेष वाद्य को बजा।। तीर्थनाथ...।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर गर्भकल्याणकेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में खिरा विनाश आठ कर्म को।
भक्ति भाव से भजूँ जिनेश पाद पद्म को।। तीर्थनाथ...।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर गर्भकल्याणकेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम जाम श्री फलादि ले फलार्चना करें।
मोक्षधाम प्राप्ति हेतु श्री जिनार्चना करें।। तीर्थनाथ...।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर गर्भकल्याणकेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर आदि अष्ट द्रव्य ले चढ़ाय ईश को।
पूज तीर्थ राज को झुकाय आज शीश को।। तीर्थनाथ...।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर गर्भकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भकल्याणक के अर्घ

दोहा- धन्य मात-पित क्षेत्र वा, गर्भ सुमंगल काल।
जो पूजे नित भाव से, होवे पूर्ण निहाल।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(काव्य छंद)

पितुनाभि महाराज, माता मरुदेवी हैं।
माँ की सेवा हेत, आयी सब देवी हैं।।
दूज बदी आषाढ़, ऋषभ गर्भ में आये।
धन्य अयोध्यानाथ, सुर नर मंगल गायें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभनाथस्य आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जितशत्रु के लाल, विजया माँ धन भागी।
जेठ अमावस श्याम, अवधपुरी[1] तब जागी।।
नाचें गायें देव, अजित गर्भ में आये।
ले पूजन की थाल, सब मिल अर्घ चढ़ायें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथस्य ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

पिता जितारि धन्य, धन्य सुसेना माता।
जननी के उर आय, संभव जिन जगत्राता।।
श्रावस्ती के भव्य, गर्भ सुमंगल गायें।
फागुन शुक्ला आठ, बहुविध अर्घ चढ़ायें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री संभवनाथस्य फाल्गुनशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय अनुत्तर छोड़, साकेतापुर आये।
अभिनंदन जिननाथ, मात गरभ में आये।।
गर्भोत्सव से पूर्व, धनपति[2] रत्न गिराये।
शुक्ला छठ वैशाख, हम सब अर्घ चढ़ायें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभिनंदननाथस्य वैशाखशुक्लाषष्ठम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात मंगला धन्य, जिनके सुमति सुनंदन।
इन्द्र करें जयकार, करें विनय अभिनंदन।।
श्रावण शुक्ला दोज, मघा ऋक्ष[3] उपकारी।
छाई खुशियाँ आज, हर्षित हैं नर-नारी।।5।।

---

1. अयोध्या, 2. कुबेर, 3. नक्षत्र।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुमतिनाथस्य श्रावण शुक्ला द्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

पद्म प्रभु जी गर्भ में आये, मात सुसीमा हर्ष मनाये।
माघ वदी छठ मंगलकारी, जयकारा गूंजे सुखकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्मनाथस्य माघकृष्णाषष्ठम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व माँ के उर आये, माँ पृथ्वी को धन्य बनाये।
भादो सुदि छठ का दिन आया, हमने मिलकर अर्घ चढ़ाया।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथस्य भाद्रपदशुक्लाषष्ठम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत वदी पंचम दिन आया, गर्भ महोत्सव सबने गाया।
चंद्रनाथ का यश हम गायें, अर्घ चढ़ाकर पाप नशायें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रनाथस्य चैत्रकृष्णापंचम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा नवमी आई, स्वप्न देख माता हर्षाई।
माँ रामा के उर[1] जिन आये, पुष्पदन्त सब के मन भाये।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्पदंतनाथस्य फाल्गुनकृष्णानवम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात सुनंदा जग उपकारी, दृढ़रथ सुत शीतल हितकारी।
चैत वदि अष्टम सुखकारी, गर्भ महोत्सव मंगलकारी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शीतलनाथस्य चैत्रकृष्णा अष्टम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

श्रेयनाथ जिन पुष्पोत्तर से, सिंहपुरी में आये थे।
पिता विष्णु माँ वेणू देवी, उनको पा हर्षाये थे।।

1. नक्षत्र।

जेठ श्याम छठ श्रवण ऋक्ष[1] में, स्वर्ग धरा पर आया था।
प्रभु को अर्घ चढ़ाकर सबने, गर्भ सुमंगल गाया था।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रेयांसनाथस्य ज्येष्ठकृष्णाषष्ठम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य ने महाशुक्र तज, विजया माँ को धन्य किया।
वसुपूज्य पितु ने तब सबको, मंगलमय शुभ दान दिया।।
वदि आषाढ़ षष्ठ शतभिष में, धन कुबेर ने बरसाया।
चम्पापुर में तब देवों ने, गर्भ सुमंगल को गाया।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वासुपूज्यनाथस्य आषाढ़कृष्णाषष्ठम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ सुरगति को तजकर, जय श्यामा माँ उर आये।
कृतवर्मा की कम्पिलपुर में, स्वर्ग गर्भ मंगल गाये।।
जेठ वदी दश भाद्रपदोत्तर[2], भव्यों को अति हर्ष हुआ।
प्रभु का गर्भ महोत्सव पाकर, भावों का उत्कर्ष हुआ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलनाथस्य ज्येष्ठकृष्णादशम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पोत्तर तज प्रभु अनंत ने, सर्वयशा माँ को पाया।
सिंहसेन की साकेता को, सुरपति ने फिर सजवाया।।
कार्तिक वद प्रतिपदा रेवती, गर्भ सुमंगल जिनवर का।
अर्घ चढ़ा हम भक्ति रचायें, ध्यान करें जगदीश्वर का।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतनाथस्य कार्तिककृष्णाप्रतिपदायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात सुव्रता का सुकृत था, धर्मनाथ उर में आये।
रत्नपुरी नृप जिनपालक बन, अन्तस[3] में अति हर्षाये।।

1. नक्षत्र, 2. उत्तराभाद्रपद नक्षत्र, 3. मन।

अंतिम स्वर्ग तजा जिनवर ने, सुदि वैशाख सुतेरस को।
प्रभु का गर्भ महोत्सव पूजें, पायें हम निर्मल यश को।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मनाथस्य वैशाखशुक्लात्रयोदश्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐरावती माँ की कुक्षि[1] में, शांतिनाथ ने शयन किया।
च्युत होकर सर्वार्थसिद्धि से, विश्वसेन घर चयन किया।।
भादों श्याम सप्तमी भरणी, हस्तिनपुर में हर्ष हुआ।
सुरपति गर्भ सुमंगल गाये, त्रिभुवन को आनंद हुआ।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शांतिनाथस्य भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुनाथ ने हस्तिनागपुर, श्रीमति माता को पाया।
तज सर्वार्थसिद्धि का वैभव, सूर्यसेन को हर्षाया।।
श्रावण श्याम दशम कृतिका में, अमरावति भूपर आई।
सुर ललनायें मंगल गाने, जिनवर के आंगन आईं।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कुन्थुनाथस्य श्रावणकृष्णादशम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मात सुमित्रा पिता सुदर्शन, हस्तिनागपुर के राजा।
अरहनाथ अपराजित को तज, बने मात के सुत राजा।।
फाल्गुन श्याम रेवती तीजी, दिक्कन्यायें आईं थी।
माता की सेवा में वे सब, द्रव्य सुमंगल लाईं थी।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरहनाथस्य फाल्गुनकृष्णातृतीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथिलापुर में सब देवों ने, आकर मंगल गान किया।
मात प्रभावति कुम्भ पिता का, मनहारी यशगान किया।।
चैत्र सुदी एकम् अश्विन को, उर में आये त्रिपुरारी।
गर्भ सुमंगल मल्लिनाथ का, मना रहे सब नर-नारी।।19।।

---

2. कोख।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मल्लिनाथस्य चैत्रशुक्लाप्रतिपदायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनत स्वर्ग छोड़ मुनिसुव्रत, माँ पद्मा के उर आये।
अतिशय पुण्य प्रभाव प्रभो का, जग में सब जय-जय गायें॥
श्रवण ऋक्ष श्रावण वदि द्वितीया, राजगृही सुखदायी थी।
सुरपति ने मुनिसुव्रत प्रभु की, गर्भ बधाई गायी थी॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथस्य श्रावणकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथिलापुर में पिता विजय को, धन्य बनाया जिनवर ने।
वदि आसोज दूज अश्विन को, वप्रिल माँ उर आप बसे॥
नमि जिनेश का गर्भ महोत्सव, सबको मंगलकारी है।
अर्घ्य चढ़ायें हम भावों से, जो भव भ्रम तमहारी है॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नमिनाथस्य आश्विनकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपराजित को छोड़ नेमि जिन, समुद्रजय घर आये थे।
शौरीपुर में मात शिवा को, सोलह स्वप्न दिखाये थे॥
कार्तिक सुदि छठ उत्तरषाढ़ा, विस्मयकारी[1] काल हुआ।
गर्भ सुमंगल भव्य मनाकर, सब जग मालामाल हुआ॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नेमिनाथस्य कार्तिकशुक्लाषष्ठम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगजननी वामा माता के, उर में पारस जिन आये।
अश्वसेन घर वाद्य बजाकर, सुर नर सारे हर्षाये॥
वदि वैशाख दूज शुभ दिन में, गर्भकल्याणक आया था।
वंदन कीर्तन अर्घ्य चढ़ाकर, सबने पुण्य कमाया था॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथस्य वैशाखकृष्णाद्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. आश्चर्यकारी।

अंतिम तीर्थंकर प्रभुवर का, गर्भोत्सव सुर पाते हैं।
कुण्डलपुर में सर्व भव्यजन, पुण्य बधाई गाते हैं।।
जगमाता त्रिशला के उर में, वर्धमान जिनवर आये।
सिद्धारथ घर वाद्य बजे थे, जिनगुण महिमा हम गायें।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महावीरनाथस्य आषाढ़शुक्लाषष्ठम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

तीर्थंकर जिन जहँ से आये, जिन माता उर अवतरण करें।
नक्षत्र योग तिथि लग्न करण, जिस वार समय का वरण करें।।
जिन जनक गोत्र कुल जन्मस्थल, गर्भोत्सव पाकर धन्य बने।
सुरपति पूजित जिनमात पिता, सुरबाला[1] से अभिवंद्य बने।।
जिन माता सोलह स्वप्न लखे, शुभ शकुन निरन्तर पाती है।
संकेत पाय आ सुर सेना, माता की भक्ति रचाती है।।
जिनवर के पावन सन्निध से, वह काल पूज्य कहलाया है।
वह काल सुमंगल पाने को, हमने भी अर्घ चढ़ाया है।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां गर्भकल्याणकेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– मूरत शांत प्रशांत, श्री जिन की सुखकार है।
करने भव दुःख शांत, करते शांतिधार हम।। *शांतये शांतिधारा।*

सुन्दर मनहर आज, पुष्पाञ्जलि अर्पण करें।
पाने शिवसुख राज, आत्म समर्पण हम करें।। *दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।*

जाप्य : ॐ ह्रीं अर्हं श्री गर्भकल्याणक सहित चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– अखिल जगत का हित करे, प्रभु का गर्भ कल्याण।
उनकी जयमाला पढ़ूँ, पाने पद निर्वाण।।

(शंभु छंद)

जय-जय तीर्थंकर जिनमाता, जय गर्भ कल्याणक की जय हो।
जय गर्भ काल मंगल की जय, कल्याणक तीर्थों की जय हो।।
गर्भागम से छह माह पूर्व, धनपति नगरी निर्माण करें।
पन्द्रह महीने बरसायें रत्न, निज आतम का कल्याण करें।।1।।
जिन गर्भागम से समय पूर्व, जिन मात लखे सोलह सपने।
जिन जनक स्वप्न फल बतलायें, तीर्थंकर सुत होंगे अपने।।
जिन गर्भकल्याणक मंगल है, शचिपति सुर आन मनाते हैं।
जिन मात-पिता की पूजा कर, बहु मंगल भेंट चढ़ाते हैं।।2।।
श्री आदिक वसु दिक्कन्यायें, जग जननी की सेवा करती।
छप्पन कुमारिकायें भी आ, सेवा कर शिव मेवा वरती।।
अदृश्य रूप हो इन्द्राणी, माता पर पुष्पाञ्जलि करती।
दिक्कन्यायें शुचि गर्भ शोध, प्रश्नों से मनरंजन करती।।3।।
कूर्मोन्नत योनि में आकर, जिन गर्भवास से मुक्त हुए।
हम गर्भ महोत्सव को पाने, जिन पूजन में अनुरक्त हुए।।
नाना विध सुन्दर वाद्य बजा, जिन गुण कीर्त्तन करने आये।
जिनबिम्ब प्रतिष्ठा उत्सव में, 'गुप्तिनंदी' जिन गुण गाये।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकराणां गर्भकल्याणकेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

श्री पंचकल्याणक महोत्सव भक्ति से हम सब करें।
कल्याण की शुभ भावना से नृत्य वंदन हम करें।।
तीर्थंकरों की चरण रज मिलती रहे यह भावना।
मुझ 'गुप्तिनंदी' की रहे शिवराज की शुभकामना।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जन्मकल्याणक पूजा

स्थापना (गीता छंद)

जग ईश के शुभ जन्म पर सारा जगत यश गा रहा।
शुभकामना जयकार और संगीत गान बजा रहा।।
तारण तरण गुणखान की सुन्दर छवि मन मोहती।
आह्वान थापन विधी मुझे प्रभु के गुणों से जोड़ती।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जन्मकल्याणक समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ:-ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक (अडिल्ल छंद)

प्रभु चरणों में त्रय धारा जल की करें।
जल अर्पण कर हम त्रय रोगों को हरें।।
जन्म कल्याणक श्री जिनवर का धन्य है।
जन्म नगर जिन मात-पिता अभिवंद्य हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर जन्मकल्याणकेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चरणों में हम चंदन लेपन करें।
चंदन लेपन से शीतलता को वरें।। जन्म...।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर जन्मकल्याणकेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अजर अमर अक्षय अविनाशी पद मिले।
भर-भर अक्षत थाल चढ़ा खुशियाँ मिले।। जन्म...।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर जन्मकल्याणकेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

रंग बिरंगे नीरज भूमिज पुष्प ले।
काम विजेता जिनवर को अर्पण करें।। जन्म...।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर जन्मकल्याणकेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षुधा रोग को दूर भगाने आ रहे।
सरस मधुर व्यंजन की थाल चढ़ा रहे।।
जन्म कल्याणक श्री जिनवर का धन्य है।
जन्म नगर जिन मात-पिता अभिवंद्य हैं।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर जन्मकल्याणकेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीपक लेकर करते आरती।
श्री जिन आरति मिथ्या मोह निवारती।। तीर्थनाथ...।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर जन्मकल्याणकेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशदिश सुरभित करने वाली धूप हो।
भक्ति भाव से अर्पित श्री जिन भूप को।। तीर्थनाथ...।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर जन्मकल्याणकेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत शिवफल की प्रतिपल है कामना।
सर्व ऋतुफल पूजा की यह भावना।। तीर्थनाथ...।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर जन्मकल्याणकेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों से पूज हम।
प्रभु अर्चा कर पा जायें अपवर्ग हम।। तीर्थनाथ...।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर जन्मकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मकल्याणक के अर्घ

दोहा- दश अतिशय युत जन्म लें, तीर्थंकर जिनराज।
पुष्पाञ्जलि ले पूजता, मिलें बाल जिनराज।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(काव्य छंद)

जन्मे आदि जिनेश, सुरपति हर्ष मनायें।
क्षीरोदधि का नीर, लेकर न्हवन करायें।।
चैतवदि नौ धन्य, सुर-नर मंगल गाते।
अर्घं चढ़ाते आज, पुण्य महाफल पाते।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चैत्रकृष्णनवम्यां ऋषभनाथ जिनेन्द्रस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ का जन्म-माघ सुदी दशमी को।
देव करें जयकार, पाने पुण्य निधी को।।
आयें हम सब साथ, जन्म सुपर्व मनाने।
अष्ट द्रव्य का थाल, लायें पुण्य कमाने।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री माघशुक्लादशम्यां अजितनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक पूनम धन्य संभव जिनवर आये।
देव-देवियाँ आय, प्रभु का न्हवन करायें।।
शचियुत देवी देव, मिलकर नृत्य रचायें।
भक्तिभाव को धार, सुन्दर अर्घ चढ़ायें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कार्तिकशुक्लापूर्णिमायां संभवनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन का आज, अभिनंदन करते हैं।
बाल रूप को देख, हम वंदन करते हैं।।
वज्रवृषभनाराच, संहनन के तुम धारी।
द्वादश शुक्ला माघ, जग-जन मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री माघशुक्लाद्वादश्यां अभिनंदननाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारस शुक्ला चैत, शुभ दिन में प्रभु आये।
पुण्यमयी तव रूप, लख सुर पुण्य कमायें।।
सुमतिनाथ का जन्म, सुमति सर्व को देता।
कर सन्मार्ग प्रकाश, मोह तिमिर हर लेता।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चैत्रशुक्लाएकादश्यां सुमतिनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

पद्मनाथ ने जन्म लिया है, धनतेरस को धन्य किया है।
सुरपति प्रभु को गोद खिलाये, मेरुगिरी पे न्हवन कराये॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां पद्मनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सुपार्श्व का रूप निराला, इक हजार अठ लक्षण वाला।
जेठ सुदी द्वादश जब आये, जन्म महोत्सव भव्य मनायें॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां सुपार्श्वनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रपुरी में चन्द्रनाथजी, पूर्ण चन्द्रसम जन्मे प्रभुजी।
पौष कृष्ण ग्यारस थी प्यारी, वाद्य बजायें सुर नर-नारी॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पौषकृष्णाएकादश्यां चन्द्रनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत का जन्म हुआ है, घर-घर में जयकार हुआ है।
हम सब जन्म बधाई गायें, मगसिर सुद एकम मन भाये॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदायां पुष्पदंतनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जब भूतल पर आये, मात सुनंदा हर्ष मनाये।
माघ वदि द्वादश सुखदायी, हमने प्रभु की भक्ति रचायी॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री माघकृष्णाद्वादश्यां शीतलनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छंद)

श्री श्रेयांस का जन्म महोत्सव, सबको मंगलकारी है।
सुरपति न्हवन करे मेरु पर, जिन दर्शन सुखकारी है॥
फाल्गुन वद ग्यारस के शुभ दिन, सुरगण भू-पर आते हैं।
अर्घ्य नाथ को चढ़ा मनोहर, समता सुख पा जाते हैं॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां श्रेयांसनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य जन्में चम्पापुर, खुशियाँ चहुँ दिश छाय रही।
मनहर प्रभु की मुद्रा लखकर, शचि मन में हर्षाय रही॥
फागुन वद चौदस को सुरगण, भक्ति रचाने आते हैं।
जिनवर की गुण संपत पाने, अर्घ चढ़ा सुख पाते हैं॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां वासुपूज्यनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ का जन्म महोत्सव, सुर-नर इन्द्र रचाते हैं।
अतिशय बाल स्वरूप मनोहर, देख-देख हर्षाते हैं॥
शचिपति नेत्र हजार बनाये, फिर भी तृप्त न हो पाता।
शुक्ला माघ चतुर्थी के दिन, शिशु मुद्रा लख हर्षाता॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री माघशुक्लाचतुर्थ्यां विमलनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जेठ वदी बारस को सबने, जन्म महोत्सव पाया था।
श्री अनंत की मुद्रा लखकर, भव अनंत विनशाया था॥
इन्द्राणी के भाग्य जगे हैं, शिशु को गोद खिलाती है।
प्रभु मुद्रा अवलोकन कर वो, सम्यक्दर्शन पाती है॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां अनंतनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ सुदि तेरस के शुभ दिन, धर्मनाथ का जन्म हुआ।
भूतल में तब खुशियाँ छाईं, रत्ननगर तब धन्य हुआ॥
सुरगण मिलकर धर्मनाथ का, मेरु पर अभिषेक करें।
ऋद्धि-सिद्धि धारी मुनि आदिक, उसे देख गुण रत्न वरें॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री माघशुक्लात्रयोदश्यां धर्मनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अवतार छंद)

तिथि चौदस जेठ सुस्याम, त्रिभुवन सुखकारी।
श्री शान्तिनाथ का जन्म, जग मंगलकारी।।
सौधर्म सहित सब देव, भूतल पर आये।
शिशु को सुर गज पर धार, मेरू ले जाये।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां शांतिनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री हस्तिनागपुर धन्य, प्रभु ने जन्म लिया।
शचि ने कर जिन अभिषेक, जीवन धन्य किया।।
एकम् शुक्ला वैशाख, नगरी खूब सजी।
मैं पूजूँ वह शुभ काल, जब शहनाई बजी।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां कुंथुनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर सुदि चौदस श्रेष्ठ, जन्में अरह प्रभो।
ऐरावत गज भी श्रेष्ठ, धारे बाल विभो।।
तब साढ़े बारह कोटि, मंगल वाद्य बजे।
हम भक्ति करें नव कोटि, सुन्दर अर्घ सजे।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मार्गशीर्षशुक्लाचतुर्दश्यां अरहनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर एकादश शुक्ल, मल्लि जिनेश्वर ने।
बन जिन तीर्थंकर बाल, मिथिलापुर जन्में।।
शचि दिव्य बलाई लेय, त्रिभुवन स्वामी की।
हम अर्चें थाली लेय, शिवपथ गामी की।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां मल्लिनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ बारस वदि वैशाख, जग में धन्य हुई।
पा मुनिसुव्रत अवतार, भव्यन वंद्य हुई।।
सुरपति ले कलश मनोज्ञ, जिन अभिषेक करे।
वह क्षण पूजा के योग्य, ऋषि उल्लेख करें।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वैशाखकृष्णाद्वादश्यां मुनिसुव्रतनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी कृष्णा आषाढ़, नमि अवतार हुआ।
सुर अर्चन करें प्रगाढ़, जय-जयकार हुआ।।
शचि जिन बालक को लाय, सुरपति को देती।
मेरू पर न्हवन कराय, भवतम हर लेती।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आषाढ़कृष्णादशम्यां नमिनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छठ श्रावण सुदि जयवान, सुर-नर जय गायें।
आये नेमी भगवान, जग में सुख छाये।।
सुर देवी कर अभिषेक, मंगल नृत्य करें।
हम पूजें वह शुभ लेख, अक्षय सत्य वरें।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां नेमिनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ग्यारस कृष्णा पौष, पूजें भवि प्राणी।
आये पारस जिनराज, कहती जिनवाणी।।
अभिषेक देख मुनिराज, दृढ़ श्रद्धान करें।
हम मनहर अर्घ चढ़ाय, जिन गुणगान करें।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पौषकृष्णाएकादश्यां पार्श्वनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि चैत सुतेरस धन्य, त्रिशला माता है।
जन्में सन्मति जग वंद्य, त्रिभुवन त्राता हैं।।
जिन माता-पिता का मान, नर सुरपति करते।
कर निज वैभव का दान, जिन गुण निधि वरते।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां महावीरनाथस्य जन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (अवतार छंद)

कुरु वंशज शांति जिनेश, कुंथु अरह भी हैं।
हरि वंशज सुव्रत नेमि, उग्रज पारस हैं।।
श्री वीर नाथ कुल आय, जग में धन्य किया।
इक्ष्वाकु कुल अवशेष, प्रभु ने वरण किया।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां जन्मकल्याणकेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– बाल प्रभु के पाद में, मिलती शांति अपार।
शांतिधारा कर रहे, हो जायें भव पार।। *शांतये शांतिधारा।*

हृदय सुमन पुलकित रहे, झुका रहे हम शीश।
सुमनांजलि अर्पित करें, दे दो प्रभु आशीष।। *दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।*

जाप्य : ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरजन्मकल्याणकेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– निज–पर के कल्याण हित, जन्म लेय जिनराज।
उनकी जयमाला पढ़ूँ, पाऊँ शिव सुखराज।।

(चौपाई छंद)

जय–जय बाल प्रभु मनहारे, सबके मन को लगते प्यारे।
जय–जय मात–पिता बड़भागी, जन्म नगर तव गुण अनुरागी।।1।।
प्रभु का जन्म कल्याणक आया, तीन लोक में उत्सव छाया।
कोटि असंख्यों वाद्य बजे थे, देवों के आसन कम्पे थे।।2।।
घंटा बजता कल्पवासी के, सिंहनाद ज्योतिष देवों के।
व्यंतर के भेरी बजती है, भवनलोक में शंख ध्वनी है।।3।।

तीन लोक में आनन्द छाये, स्वर्ग लोक भूतल पर आये।
नरकों में भी शांति समाये, छह ऋतुएँ भी झूमें गाये।।4।।
जन्म समय सुरपति शचि आये, प्रभु दर्शन कर मन हषार्ये।
सुरपति ऐरावत गज लाये, प्रभु को मेरु गिरी ले जाये।।5।।
इक हजार अठ कलशे भारी, नाना मणिरत्नों की झारी।
वसु योजन गहराई वाले, चतु योजन चौड़ाई वाले।।6।।
मुख इक योजन प्रति कलशों से, प्रभु का न्हवन करें भावों से।
ऋद्धिधर मुनिगण भी आये, बाल छवि लख पुण्य कमाये।।7।।
सुर नर विद्याधर जय बोले, निज मन के अंतर पट खोले।
जन्मत दश अतिशय सुखकारी, हित-मित वचन अतुल बल धारी।।8।।
समचतुरस संस्थान प्रभु का, वज्र ऋषभ नाराज विभो का।
एक शतक अठ लक्षण शोभे, तन सुगन्ध मय जन मन लोभे।।9।।
स्वेद नहीं प्रभु तन में आये, श्वेत रुधिर सब रोग भगाये।
जिनवर का निहार ना होता, अतिशय रूप निरख सुख होता।।10।।
जन्मोत्सव की भक्ति रचायें, जन्म मरण का बंध छुड़ाये।
'गुप्तिनंदी' जिनवर गुण गायें, जन्मोत्सव में पुण्य कमाये।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मकल्याणकेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

श्री पंचकल्याणक महोत्सव भक्ति से हम सब करें।
कल्याण की शुभ भावना से नृत्य वंदन हम करें।।
तीर्थंकरों की चरण रज मिलती रहे यह भावना।
मुझ 'गुप्तिनंदी' की रहे शिवराज की शुभकामना।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

तपकल्याणक पूजा

स्थापना (गीता छंद)

हे जगतबन्धु ! हे जिनेश्वर, जातरूप दिगम्बरा।
निर्द्वन्द्व ! निर्मोही ! विरागी, निराबाधी मुनिश्वरा।।
आओ विराजो कृपा सिन्धु, कृपा दृष्टि कीजिए।
आह्वान थापन हम करें, हमको शरण में लीजिए।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर तपकल्याणक समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक (गीतिका छंद)

हम पतित तुम पावन प्रभु, जीवन मेरा पावन करो।
जल कुंभ से धारा करें, त्रय रोग का सब क्षय करो।।
तप त्याग संयम के धनी, यह शक्ति हममें भी जगे।
तीर्थेश अर्चन से हमारे, रोग-शोक सभी भगे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर तपकल्याणकेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन शशि से भी अधिक, शीतल प्रदाता हैं प्रभो।
चंदन चरण लेपन करें, भव दाह मेटो हे विभो !।। तप...।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर तपकल्याणकेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय गुणों के ईश से, अक्षय अनुपम गुण वरें।
भर पुंज अक्षत के चढ़ा, निज दोष और दुर्गुण हरें।। तप...।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर तपकल्याणकेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

इन कामबाणों से व्यथित, कोमल हृदय घबरा रहा।
निज शोक तजने हे प्रभो !, बहु पुष्प थाल चढ़ा रहा।। तप...।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर तपकल्याणकेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

हम हैं क्षुधा रोगी प्रभो, द्वारे तुम्हारे आ रहे।
रसयुक्त व्यंजन को चढ़ा, सब रोग तजने आ रहे ॥
तप त्याग संयम के धनी, यह शक्ति हममें भी जगे।
तीर्थेश अर्चन से हमारे, रोग-शोक सभी भगे॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर तपकल्याणकेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कैवल्य दीप प्रकाश से, मोहान्ध जिनने हर लिया।
उनको चढ़ा कर दीप जगमग, मोह भंजन कर लिया॥ तप...॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर तपकल्याणकेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

त्रैलोक्य के हो भूप तुम, यह धूप अर्पण हम करें।
निज आत्म रूप सुगंध पाने, भजन गुण कीर्त्तन करें॥ तप...॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर तपकल्याणकेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुक्तिपति से वर मिले, मुक्तिपुरी का घर मिले।
नाना फलों की अर्चना का, हे प्रभो ! यह फल मिले॥ तप...॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर तपकल्याणकेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

आठों गुणों के ईश को, हम अष्ट द्रव्य चढ़ा रहे।
हम पद अनर्घ सुलाभ हित, आशीष प्रभु से पा रहे॥ तप...॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर तपकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपकल्याणक के अर्घ

दोहा- **कर्म श्रृंखला तोड़ने, धरा दिगम्बर रूप।**
सुमनावली ले पूज हम, पायें प्रभु सम रूप॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(काव्य छंद)

नवमी कृष्णा चैत, प्रभु ने तप को धारा।
आदि जिनेश महान्, छोड़ दिया संसारा॥

लौकांतिक सुर आय, तप अनुमोदन करते।
हम भी अर्घ चढ़ाय, कर्म विमोचन करते।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चैत्रकृष्णनवम्यां ऋषभनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेष दिगम्बर धार, जीत लिया कर्मों को।
अजितनाथ मुनिराज, धारा दश धर्मों को।।
माघ सुदी नव धन्य, जिसमें दीक्षा धारी।
अर्घ समर्पित नाथ, तुम हो मोह जितारी[1]।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री माघशुक्लानवम्यां अजितनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभवनाथ जिनेश, भव-भव पीड़ा हरने।
धरा दिगम्बर वेष, आत्म सुखों को वरने।।
तव मुद्रा को देख, सुर-नर शीश झुकाते।
मगसिर पूनम धन्य, हम सब अर्घ चढ़ाते।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मार्गशीर्षशुक्लापूर्णिमायां संभवनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन जगवंद्य, इन्द्र सभी मिल ध्यावें।
द्वादश शुक्ला माघ, जिनवर मुनिपद पावें।।
करके भाव विशुद्ध, सर्व ऋद्धियाँ पाई।
अर्घ चढ़ाते आज, जिन मुद्रा मन भाई।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री माघशुक्लाद्वादश्यां अभिनंदननाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जातिस्मरण विचार सुमति विरक्त हुए थे।
शिवपथगामी जीव, तप अनुरक्त हुए थे।।
नवमी सुदि वैशाख, जिनवर ने तप धारा।
ले पूजन की थाल, भव्य करें जयकारा।।5।।

1. जीतने वाले।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वैशाखशुक्लानवम्यां सुमतिनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छंद)

प्रभु को जातिस्मरण हुआ था, उससे ही वैराग्य हुआ था।
पद्मनाथ ने तप अपनाया, धनतेरस को धन्य बनाया।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कार्तिककृष्णात्रयोदश्यां पद्मनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋतुवर्तन[1] लख मोह नशाया, प्रभुवर ने वैराग्य जगाया।
ज्येष्ठ शुक्ल द्वादश मन भाये, श्री सुपार्श्व जिन को हम ध्यायें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्यां सुपार्श्वनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण देख विरक्त हुए थे, चन्द्रनाथ सन्यस्त हुए थे।
पौष वदी एकादश प्यारी, अर्घ चढ़ावें सब नर-नारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पौषकृष्णाएकादश्यां चंद्रनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उल्कापात[2] हुआ धरती पर, पुष्पदंत बन गये मुनीश्वर।
मगसिर शुक्ला एकम आये, अर्घ चढ़ा हम पुण्य कमायें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदायां पुष्पदंतनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल ने मुनिव्रत को धारा, मोक्ष मार्ग का किया प्रचारा।
माघ कृष्ण द्वादश जब आये, हम सब दीक्षा पर्व मनायें।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री माघकृष्णाद्वादश्यां शीतलनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

ऋतु बसंत की नश्वरता लख, प्रभु के मन वैराग्य जगा।
फाल्गुन कृष्णा एकादश को, भौतिक सुख का योग भगा।।

1. परिवर्तन, 2. तारा टूटना।

लौकांतिक देवों ने आकर, संयम का अनुमोद किया।
श्री श्रेयांस बने तप धारी, मुनिपद का आमोद लिया।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां श्रेयांसनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के पूज्य पदों को, वासुपूज्य मन में धारें।
जाति स्मृति पा तीर्थंकर जिन, मोह शत्रु को संहारें।।
पुष्पाभा शिविका में चढ़कर, बाग मनोहर आये थे।
फाल्गुन श्याम चतुर्दश पावन, हम जिन भक्ति रचायेंगे।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां वासुपूज्यनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेघ[1] नाश का दृश्य देखकर, विमलनाथ मन अकुलाये।
द्वादश अनुप्रेक्षायें[2] भाकर, भेदज्ञान को प्रगटायें।।
भूषण वसन विषय विष तजकर, नग्न दिगम्बर रूप धरा।
माघ शुक्ल की चौथ प्रभु ने, सर्व ऋद्धि का तेज वरा।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री माघशुक्लाचतुर्थ्यां विमलनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अनंत ने भव अनंत की, पीड़ाओं को जान लिया।
उल्कापात देखने भर से, निज आतम का भान किया।।
जेठ वदि बारस को प्रभु ने, मोह श्रृंखलायें तोड़ी।
इक हजार राजाओं ने भी, तुम संग निज कड़ियाँ जोड़ी।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्येष्ठकृष्णाद्वादश्यां अनंतनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ ने दश धर्मों से, आत्मधर्म का वरण किया।
माघ सुदी तेरस को प्रभु ने, मुनिमुद्रा का वरण किया।।
सम्यक् तप आराधन करना, जिन मुद्रा सिखलाती है।
ऐसे मुनि की उत्तम अर्चा, अष्ट कर्म विनशाती है।।15।।

1. बादल, 2. भावनाएँ।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री माघशुक्लात्रयोदश्यां धर्मनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

श्री शांतिनाथ को द्वय पद से, जब शांति नहीं मिल पाई थी।
वदि ज्येष्ठ चतुर्दश को प्रभु ने, निज आत्म भावना भाई थी॥
वे नमः सिद्ध उच्चारण कर, केशों का लोचन करते हैं।
ऐसे प्रभुवर को अर्घ चढ़ा, हम कर्म विमोचन करते हैं॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां शांतिनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भौतिक सुख ही दुख का कारण, यह कुंथुनाथ ने जान लिया।
वैशाख शुक्ल एकम् प्रभु ने, मुनिमुद्रा धर कल्याण किया॥
मुनि दीक्षा धारण करते ही, चौंसठ ऋद्धि जिन प्राप्त हुई।
इन वीतराग हितदेशी की, महिमा जग में फिर व्याप्त हुई॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां कुंथुनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बादल की क्षण भंगुरता लख, अरनाथ जगत सुख छोड़ चले।
मगसिर शुक्ला दशमी को वे, भार्या सुत से मुख मोड़ चले॥
इन्द्राणी स्वस्तिक चौक बना, जिन स्वामी को बैठाती है।
नृप इक सहस्र की दीक्षा लख[1], वह दीक्षा भाव बनाती है॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मार्गशीर्षशुक्लादशम्यां अरहनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत नश्वर लख मल्लिनाथ, जग माया तज सन्यस्त हुए।
झट ऋद्धि सिद्धियाँ भृत्य हुई, जग के सब संकट अस्त हुए॥
जिन केश रत्न मंजूषा[2] धर, सुरपति क्षीरोदधि में छोड़े।
मगसिर शुक्ला ग्यारस पावन, हम निज मन विषयों से मोड़ें॥19॥

1. देखकर, 2. पेटी।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां मल्लिनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जातिस्मृति मुनिसुव्रत जिन को, वैराग्य जगाने आयी थी।
लौकांतिक सुर की टोली तब, अनुमोदन करने आयी थी।।
वैशाख कृष्ण दशमी का दिन, सौधर्म भूल ना पायेंगे।
मुनिव्रत विधिमें सहभागी बन, अविनश्वर शिव सुख पायेंगे।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वैशाखकृष्णादशम्यां मुनिसुव्रतनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमिजिन को जाति स्मरण हुआ, प्रभु जग सुख तज मुनिव्रत पाया।
आषाढ़ वदी दश देवों ने, त्रिभुवन में जय-जय गुँजाया।।
सुर-नर खेचर गणधर मुनिवर, तप मंगल पर्व मनाते हैं।
हम भी जिनवर को अर्घ्य चढ़ा, जिन गुण से प्रीत बढ़ाते हैं।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आषाढ़कृष्णादशम्यां नमिनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पशु बंधन क्रंदन को लखकर, वैराग्य जगा जिनके मन में।
राजुल प्यारी दुनियादारी, सब छोड़ गये नेमी वन में।।
श्रावण शुक्ला छठ मंगल दिन, गिरनारी त्रिपुरारी आये।
जो पूजे इस मंगल दिन को, वो क्रम से शिवनारी पाये।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रावणशुक्लाषष्ठम्यां नेमिनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाति स्मृति से पारस स्वामी, मुनि पद धारें अन्तर्यामी।
शुभ पौषवदि ग्यारस के दिन, तप मंगल पायें शिवगामी।।
नृप तीन शतक बन जिन अनुचर, सम्यक् संयम अपनाते हैं।
तप मंगल भूषित पारस को, हम अर्घ्य विशाल चढ़ाते हैं।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पौषकृष्णाएकादश्यां पार्श्वनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव पूरब का कुछ ज्ञान हुआ, जिससे प्रभु को निज भान हुआ।
मगसिर दशमी श्यामा के दिन, सन्मति को संयम लाभ हुआ।।
चन्द्राभा शिविका में प्रभु को, सौधर्म नाथ[1] को वन लाया।
सुरनर किन्नर ने अर्घ्य चढ़ा, श्री वीर प्रभु का गुण गाया।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां महावीरनाथस्य दीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

जिन करें पंच मुष्ठी लोचन, सुरपति क्षीरोदधि ले जाये।
चौबिस जिन के आहार समय, सुर अचरज पाँचों करवाये।।
आदीश्वर से सन्मति जिन का, हम तपकल्याण मनाते हैं।
इनमें जो पाँचों बालयती, उनको पुनि अर्घ चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां दीक्षाकल्याणकेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– आत्मशांति पाने करे, जल की पावन धार।
प्रभु चरणों में हम करें, शांतये शांतिधार।। *शांतये शांतिधारा।*

मनहर पुष्प चढ़ा रहे, झुका–झुका कर माथ।
आत्मकली खिल जायेगी, पुष्पाञ्जलि के साथ।। *दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।*

जाप्य : ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरतपकल्याणकेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– तप साधन करने चले, प्रभुवर वन की ओर।
आत्म शक्ति से कर दिया, कर्मों को झकझोर।।

(तर्ज : नागिन)

जयकार करो, सब मिलके करो, तप कल्याणक जयमाल की।
हम सब गायें प्रभु जयमाला,
द्वादश अनुप्रेक्षायें भाकर, धन वैभव ठुकरायें।।

1. श्री महावीर स्वामी।

तप अनुमोदन करने हेतु, लौकान्तिक सुर आयें। प्रभुजी लौकान्तिक...
वंदन करते, कीर्त्तन हरते, दीक्षाधारी प्रभुनाथ की।। हम सब...

सिद्ध प्रभु का सुमरण करके, वेष दिगम्बर धारें।
पंच मुष्टि से लोचन करके, आत्मस्वरूप निहारें।। प्रभुजी आत्म...
ढ़ोलक बाजे, झांझर बाजे, जयकार करें तप त्याग की।। हम सब...

चौथा ज्ञान मिला उस क्षण ही, चौंसठ ऋद्धि पायी।
नाना विधी के तप तपते थे, तीर्थंकर अतिशायी।। प्रभुजी तीर्थंकर...
चर्चा करते, अर्चा करते, तीर्थंकर के वैराग्य की।। हम सब...

धन्य दिवस आहार दान का, श्रावक घर प्रभु आये।
सुरगण नभ से दान तीर्थ में, पंचाश्चर्य कराये।। प्रभुजी पंचाश्चर्य...
हम नृत्य करें, सब भक्ति करें, उस पावन मंगल दान की।। हम सब...

गुरु मुद्रा के दर्शन करके, भाग्य हमारे जागे।
तप कल्याणक की पूजा कर, विषय कषायें भागे।। प्रभुजी विषय...
'गुप्तिनंदी', अर्चा करते, तप गुणधारी भगवान की।।

हम सब गायें प्रभु जयमाला...

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकराणां तपकल्याणकेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

श्री पंचकल्याणक महोत्सव भक्ति से हम सब करें।
कल्याण की शुभ भावना से नृत्य वंदन हम करें।।
तीर्थंकरों की चरण रज मिलती रहे यह भावना।
मुझ 'गुप्तिनंदी' की रहे शिवराज की शुभकामना।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

ज्ञानकल्याणक पूजा

स्थापना (गीता छंद)

जो धर्म नेता, कर्म भेत्ता, विश्व के ज्ञातार हैं।
शरणागतों का देशना से, कर रहे उद्धार हैं।।
उन केवली चौबीस जिन के, ज्ञान की चर्चा करें।
सुन्दर सुगन्धित पुष्प ले, आह्वान कर अर्चा करें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर ज्ञानकल्याणक समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ:-ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक (नरेन्द्र छंद)

निर्मल घट में निर्मल जल ले, जिन सन्मुख त्रयधार करूँ।
रोग त्रय हर रत्नत्रय वर, निज जीवन उद्धार करूँ।।
केवलज्ञान कल्याणक मंगल, मिथ्या मद अज्ञान हरे।
जिनशासन नायक जिनवर की, पूजा मम उत्थान करे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर ज्ञानकल्याणकेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीर केसर सित चंदन, प्रभु के चरण चढ़ाता हूँ।
अपने भव संताप पाप को, पग रज लेय मिटाता हूँ।। केवलज्ञान...।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर ज्ञानकल्याणकेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल श्वेत रत्न मोती का, अक्षय पुंज बनाया है।
अक्षय सुख हित अक्षय पदधर, प्रभु को आज चढ़ाया है।। केवलज्ञान...।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर ज्ञानकल्याणकेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सब वर्णों के षड् ऋतुओं के, नीरज भूमिज पुष्प लिये।
काम रोग हर्ता जिनवर के, पाद कमल में भेंट किये।। केवलज्ञान...।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर ज्ञानकल्याणकेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोकख्यात नमकीन मिष्ठ, प्रासुक व्यंजन के थाल भरूँ।
क्षुधा विजय हित क्षुधा विजेता, के सन्मुख नत भाल धरूँ।।
केवलज्ञान कल्याणक मंगल, मिथ्या मद अज्ञान हरे।
जिनशासन नायक जिनवर की, पूजा मम उत्थान करे।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर ज्ञानकल्याणकेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-पर प्रकाशी दीप ज्योति ले, दीपावली सजाता हूँ।
आर्त्त शोक मिथ्यातम हर्त्ता, प्रभु की आरती गाता हूँ।। केवलज्ञान...।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर ज्ञानकल्याणकेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग महकायें रोग मिटाये, वह शुचि धूप जलायी है।
कर्म काष्ठ दाहक श्रीजिन के, द्वारे आज चढ़ायी है।। केवलज्ञान...।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर ज्ञानकल्याणकेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित सरस मधुर बहुरंगी, षड् ऋतु के फल मनहारे।
शाश्वत शिवफल की वांछा से, अर्पित अर्हत् के द्वारे।। केवलज्ञान...।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर ज्ञानकल्याणकेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों के भी देव आप ही, पद अनर्घ्य के दातारी।
गीत नृत्य संगीत वाद्य संग, अर्घ चढ़ाऊँ अघहारी।। केवलज्ञान...।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर ज्ञानकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानकल्याणक के अर्घ

दोहा- चार घातिया नाशकर, बने नाथ अरिहंत।
पुष्प लिए उनको भजें, करें कर्म का अंत।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(काव्य छंद)

पुरिमताल उद्यान, फागुन ग्यारस श्यामा।
समोशरण सुविशाल, बना नयन अभिरामा।।

तप कर वर्ष हजार, केवल ज्योति जगाई।
आदिनाथ भगवान, पूजें हम शिवराई।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां ऋषभनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार घातिया नाश, तीर्थंकर पद धारा।
ग्यारस शुक्ला पौष, ओम नाद उच्चारा।।
नाना भाषा रूप, स्याद्वाद मय वाणी।
अजितनाथ भगवान, करें पाप की हानी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पौषशुक्लाएकादश्यां अजितनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक श्यामा चौथ, मगसिर ऋक्ष मनोहर।
करके कर्म विनाश, संभव बने जिनेश्वर।।
समोशरण के बीच, गंधकुटी में राजे।
चँवर मनोहर लेय, चौंसठ यक्ष विराजे।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कार्तिककृष्णाचतुर्थ्यां संभवनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदस शुक्ला पौष, सर्वज्ञेय को जाना।
इसको केवलज्ञान, हम सबने है माना।।
पुण्य उदय से जीव, समोशरण में आते।
अभिनंदन जिनराज, मोक्षमार्ग बतलाते।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पौषशुक्लाचतुर्दश्यां अभिनंदननाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमति घात चउकर्म, बने सर्व के ज्ञाता।
धनद इन्द्र अनुसार, समोशरण रचवाता।।
दृढ़ श्रद्धानी जीव, धर्म सभा में आते।
ग्यारस शुक्ला चैत, उत्तम अर्घ चढ़ाते।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चैत्रशुक्लाएकादश्यां सुमतिनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छंद)

चार घातिया कर्म विनाशे, तत्क्षण केवलज्ञान प्रकाशे।
हेम पद्म पर पद्म विराजे, चैत पूर्णिमा प्रभु से साजे।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चैत्रशुक्लापूर्णिमायां पद्मनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन कृष्णा षष्ठम आये, श्री सुपार्श्व सर्वज्ञ कहाये।
प्रभु की धर्म सभा मनहारी, आये अनगिन सुर नर नारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री फाल्गुनकृष्णाषष्ठम्यां सुपार्श्वनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रनाथ बन केवलज्ञानी, भव्यों को देते श्रुतवाणी।
फागुन श्याम सप्तमी प्यारी, दिव्यध्वनि खिरती है न्यारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां चंद्रनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ला दोज लुभाये, पुष्पदंत अर्हत् पद पायें।
समोशरण जिनका मनहारी, हम सब आये शरण तिहारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कार्तिकशुक्लाद्वितीयायां पुष्पदंतनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिन शीतलता धारें, दिव्य ज्योति जग में विस्तारें।
पौष वदि चौदस सुखदायी, हमने प्रभु की महिमा गायी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पौषकृष्णाचतुर्दश्यां शीतलनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

प्रभु श्रेयांस श्रेय के दाता, श्रेष्ठ मार्ग बतलाते हैं।
माघ वदी मावस को जिनवर, मोक्षमार्ग दर्शाते हैं।।

सप्त धातु से रहित जिनेश्वर, परमौदारिक तन धारी।
अर्घ चढ़ाकर ज्ञान महोत्सव, मना रहे सुर नरनारी।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री माघकृष्णाऽमावस्यायां श्रेयांसनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षपक श्रेणी आरोहण करके, घातिकर्म का दहन किया।
क्षायिक नव लब्धिधर प्रभु को, तीन लोक ने नमन किया।।
माघ सुदी द्वितीया की बेला, सुरपति धर्मसभा रचता।
वासुपूज्य का ज्ञान पूजकर, कर्म कालिमा से बचता।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री माघशुक्लाद्वितीयायां वासुपूज्यनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ ने शुक्ल ध्यान से, कर्म मलों का नाश किया।
माघ शुक्ल षष्ठी को जिनवर, केवलज्ञान विकास किया।।
समोशरण के मानथंभ से, प्रभु ने जग का मान हरा।
जिसने पाई शरण आपकी, उसने सम्यक् ज्ञान वरा।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री माघशुक्लाषष्ठम्यां विमलनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोटि-कटि जन्मों के संचित, पापकर्म भटकाते हैं।
ज्ञान साधना करने से ही, मोहकर्म नश जाते हैं।।
चैत श्याम मावस को जिनवर, दिव्य देशना देते हैं।
प्रभु अनंत शरणागत जन के, अघ अनंत हर लेते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां अनंतनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ ने धर्मचक्र से, कर्मचक्र को चूर किया।
पौष शुक्ल पूनम को प्रभु ने, आनंदामृत लाभ लिया।।
धर्म चक्रधारी यक्षों से, शोभित प्रभु की धर्म सभा।
अर्घ चढ़ायें भक्त विनय से, पा जायें तव ज्ञानप्रभा।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पौषशुक्लापूर्णिमायां धर्मनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

श्री शांतिनाथ अघ क्लांति हरें, कैवल्य ज्योति के भण्डारी।
सुदि पौष दशम अपराह्न समय, जिन बने वीतभय त्रिपुरारी।।
धनपति ने धर्मसभा रचकर, पुनि-पुनि जयघोष लगाया है।
प्रभु पद नीचे रच स्वर्ण कमल, अतिशायी पुण्य कमाया है।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पौषशुक्लादशम्यां शांतिनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि तीज चैत्र कुन्थु जिन ने, चउ घाति कर्म का हनन किया।
भू से ऊपर धनु पाँच सहस, सुर समवशरण का सृजन किया।।
सर्वाण्ह यक्ष ले धर्म चक्र, तीर्थंकर यश गाथा गाये।
हम जिन गुण धर्मसभा को ध्या, शुभ अर्घ चढ़ा तव गुण पायें।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चैत्रशुक्लातृतीयायां कुंथुनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ने ले लौकिक चक्ररत्न, षट्खण्ड किये निज के वश में।
ले धर्मचक्र हर कर्मचक्र, कर बैठे मोह असुर वश में।।
कार्तिक शुक्ला बारस के दिन, अर जिन ने निज गुण सार लहा।
धनपति कृत धर्मसभा लखकर, सुरपति करता सत्कार महा।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कार्तिकशुक्लाद्वादश्यां अरहनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्ली जिनवर नश मोह मल्ल, निर्मल गुणमणि से युक्त हुए।
वदि दूज पौष गोधूलि समय, प्रभु घाति कर्म से मुक्त हुए।।
सुर-नर निज वैभव कोष लुटा, पुलकित होकर करते अर्चा।
हम भी वह जिनगुण पूज रहे, जिसकी त्रिभुवन में है चर्चा।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पौषकृष्णाद्वितीयायां मल्लिनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत मुनिव्रत पूर्ण किये, निज केवलज्ञान जगा बैठे।
नवमी श्यामा वैशाख श्रवण, चउ कर्मन् दैत्य भगा बैठे।।
जिनवर की धर्मसभा थल से, फैला सुभिक्ष सौ योजन तक।
आरोग्य धर्म धन-धान्य बढ़े, ज्ञानामृत बरसा घर-घर तक।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वैशाखकृष्णानवम्यां मुनिसुव्रतनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमि जिन निज कर्म निशा नाशे, फिर केवल रवि आलोक हुआ।
मगसिर शुक्ला ग्यारस संध्या, सारा त्रिभुवन गत शोक हुआ।।
जिनवर ने अपनी वाणी से, सम्यक् शिवपथ उद्योत किया।
हमने भी मंगल भक्ति रचा, जिन गुण से मन उत्प्रोत किया।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां नमिनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमीश्वर पहले मोह नाश, फिर निज त्रय घाति कर्म नशे।
गुण-द्रव्य और सब पर्यायें, प्रभु केवल दर्पण में विलसे[1]।।
गिरनारी पर रच धर्मसभा, धनपति ने सौख्य कमाया है।
हमने जिनगुण निधियाँ पाने, मनभावन अर्घ बनाया है।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आश्विनशुक्लाप्रतिपदायां नेमीनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ ने दृढ़ता से, निज आतम ध्यान लगाया था।
उस समय कमठ शठ ने आकर, दारुढ़ उपसर्ग रचाया था।।
अहिपति पद्मावति ने आकर, प्रभु का उपसर्ग मिटाया था।
वदि चैत चतुर्थी जिनवर ने, निज केवलज्ञान जगाया था।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां पार्श्वनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋजुकूला सरिता के तट पर, सन्मति ने चौथा ध्यान धरा।
वैशाख शुक्ल दशमी संध्या, जिन अक्षय क्षायिक ज्ञान वरा।।

1. स्पष्ट दिखे।

सुरपति ने समोशरण रचवा, ज्ञानोत्सव जग में करवाया।
हम अर्घ चढ़ा वह दिन पूजें, निश्चय शुभ ज्ञान उदय आया॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वैशाखशुक्लादशम्यां महावीरनाथस्य केवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

सर्वज्ञों के उपदेश गमन, भव्यों के सुकृत[1] से होते।
तब केवल गुण के दश अतिशय, चौदह सुरकृत अतिशय होते॥
उपसर्ग न हो दुर्भिक्ष हरे, प्रभु वैर अनादि मिटाते हैं।
त्रिभुवनपति अक्षय दानी को, हम अर्घ मनोज्ञ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां केवलज्ञानकल्याणकेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– केवलज्ञान जहाज से, करें भवोदधि पार।
तीन जगत की शांति हित, करता शांतिधार॥

शांतये शांतिधारा।

भावों के बोधक सुमन, भक्ति के उपहार।
अर्पित जिन जगदीश को, पुष्प माल का हार॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य : ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– मोह जीत जिनराज ने, जीता जगत अशेष।
उनकी जयमाला सुखद, हरे सकल दुःख क्लेश॥

(तर्ज – माईन...)

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर तीर्थंकर को ध्याता हूँ।
जग सुखकारी भव दुःखहारी प्रभु की भक्ति रचाता हूँ॥

1. पुण्य।

जिनवर तपकर शुक्ल ध्यान धर कर्म घातिया विनशाये।
दर्शन ज्ञान अनंत वीर्य सुख चार गुणों को प्रगटायें।।
चौंतीस अतिशय धर प्रभुवर की धर्म सभा में आता हूँ।। जग... ।।1।।

समोशरण तीर्थंकर प्रभु का इन्द्र कुबेर रचाते हैं।
जिसमें मुनिगण देव पशु नर असंख्यात आ जाते हैं।।
ऐसे प्रभु के दर्शन पाने मैं भी पुण्य कमाता हूँ।। जग... ।।2।।

समोशरण जिस दिश में जायें षट् ऋतु के फल-फूल खिले।
दिव्यध्वनि जिनवर की सुनकर भव्यों के मन कुमुद खिले।।
तीर्थंकर प्रकृति धारी की पूजा करने आता हूँ।। जग... ।।3।।

हे जिनवर तुम ज्ञान सिन्धु की एक बूंद भी मिल जाये।
उसमें भी मेरे चिर भव के पाप ताप सब धुल जाये।।
इस हेतु मैं 'गुप्तिनंदी' तव चरणन् शीश झुकाता हूँ।
जग सुखकारी भव दुःखहारी प्रभु की भक्ति स्चाता हूँ।। जग... ।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां ज्ञानकल्याणकेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

श्री पंचकल्याणक महोत्सव भक्ति से हम सब करें।
कल्याण की शुभ भावना से नृत्य वंदन हम करें।।
तीर्थंकरों की चरण रज मिलती रहे यह भावना।
मुझ 'गुप्तिनंदी' की रहे शिवराज की शुभकामना।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

मोक्षकल्याणक पूजा

स्थापना (शंभु छंद)

श्री स्वयंबुद्ध लक्ष्मीभर्ता, जगज्येष्ठ जगत्पति जगत्पिता।
अक्षय अनुपम अनमोल अचल, निज आठ मूलगुण के धर्त्ता।।
हे मोक्षकल्याणक भूषित जिन, मेरे मनमंदिर में आओ।
मैं आह्वानन थापन करता, मुझको शिवराह बता जाओ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर मोक्षकल्याणक समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ:-ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक (सखी छंद)

जिनवर अनुपम गुणधारी, निर्मल जल सम मनहारी।
जल की त्रयधार चढ़ाऊँ, जन्मादिक रोग नशाऊँ।।
मैं मोक्षकल्याणक मनाऊँ, शिवराह पथिक बन जाऊँ।
बहु मंगल वाद्य बजाऊँ, पूजन का लाभ उठाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर मोक्षकल्याणकेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन शीतलता देते, भव पाप ताप हर लेते।
चंदन केसर घिस लाया, तीर्थंकर चरण चढ़ाया।। मैं मोक्ष...।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर मोक्षकल्याणकेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन अक्षय पद के धारी, हैं अक्षय पद दातारी।
मैं अक्षय पुञ्ज चढ़ाऊँ, जिन सन्मुख नृत्य रचाऊँ।। मैं मोक्ष...।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर मोक्षकल्याणकेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभुवर ने काम नशाया, निज आत्म पुष्प महकाया।
उनको नित शीश झुकाऊँ, चंपादिक पुष्प चढ़ाऊँ।। मैं मोक्ष...।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर मोक्षकल्याणकेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जो क्षुधा रोग को जीते, निज आत्म सुधारस पीते।
मैं उनका कीर्तन गाऊँ, बहुविध पक्वान्न चढ़ाऊँ।।
मैं मोक्षकल्याणक मनाऊँ, शिवराह पथिक बन जाऊँ।
बहु मंगल वाद्य बजाऊँ, पूजन का लाभ उठाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर मोक्षकल्याणकेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रभु केवल रवि प्रगटायें, जग मिथ्या तिमिर भगायें।
मैं उनकी आरती गाऊँ, उज्ज्वल घृतदीप सजाऊँ।। मैं मोक्ष...।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर मोक्षकल्याणकेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

निज ध्यानाग्नि प्रगटाई, कर्मों की धूप जलाई।
उनको शुचि धूप चढ़ाऊँ, निज कर्मन् पिण्ड जलाऊँ।। मैं मोक्ष...।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर मोक्षकल्याणकेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जग नश्वर सुख ठुकराये, शाश्वत शिव फल को पायें।
अर्पित हैं उनके द्वारे, आमादिक फल मनहारे।। मैं मोक्ष...।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर मोक्षकल्याणकेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे जिन ! मम अघ हर लेना, निज सम अनर्घ्य पद देना।
मैं आठों द्रव्य सजाऊँ, भक्ति से अर्घ चढ़ाऊँ।। मैं मोक्ष...।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर मोक्षकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षकल्याणक के अर्घ

दोहा– **आठों कर्म नशे विभो, बनें सिद्ध भगवान।**
कुसुमांजलि अर्पण करूँ, बन जाऊँ भगवान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(काव्य छंद)

चौदस माघ सुश्याम, पूर्व समय जिनवर ने।
शेष कर्म का नाश, किया ऋषभ जिनवर ने।।

दस हजार मुनिराज, संग अष्टापद आये।
आदिनाथ के साथ, मोक्षपुरी को जायें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री माघकृष्णाचतुर्दश्यां ऋषभनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम शुक्ला चैत, पौर्वाह्निक मनहारी।
मुनि हजार के साथ, अजित बने अघहारी।।
शेष कर्म को नाश, गिरि सम्मेदशिखर से।
लाडू का शुभ थाल, लाये भवि निज घर से।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चैत्रशुक्लापंचम्यां अजितनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करके कर्म निरोध, आत्म विशोधन कीना।
मुनि हजार के साथ, सिद्धरूप वर लीना।।
चैत्र सुदी छठ धन्य, संभव मोक्ष पधारें।
मोदक अर्घ चढ़ाय, हम प्रभु रूप निहारें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चैत्रशुक्लाषष्ठम्यां संभवनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि शुक्ला वैशाख, छठ का दिन जब आया।
मुनि हजार के साथ, अविनश्वर सुख पाया।।
अभिनंदन जिनराज, जग के पाप निवारो।
भक्त खड़े नत शीश, उनको आप उबारो।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वैशाखशुक्लाषष्ठम्यां अभिनंदननाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारस शुक्ला चैत, योग निरोध किया है।
मुनि हजार के साथ, शिवपथ शोध लिया है।।
सुमति भक्त अनिवार्य, शिव रमणी पायेंगे।
इस कारण हम आज, प्रभुवर को ध्यायेंगे।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चैत्रशुक्लाएकादश्यां सुमतिनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

फाल्गुन श्याम चौथ मन भाये, पद्मनाथ शिवपुर को जायें।
अक्षय पद को पाने वाले, तीन भुवन के हो रखवाले।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री फाल्गुनकृष्णाचतुर्थ्यां पद्मनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा सात विशाखा, जिनवर ने शिवफल को चाखा।
नाथ सुपारस कर्म नशायें, हम सब उनकी भक्ति रचायें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां सुपार्श्वनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक हजार ऋषियों संग आये, गिरि सम्मेद शिखर को जायें।
चंद्र बने फिर त्रिभुवनरायी, फाल्गुन शुक्ल सात मन भायी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री फाल्गुनशुक्लासप्तम्यां चंद्रनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादव शुक्ला अष्टम् आई, पुष्पदंत ने शिव वधु पाई।
हमने उनको अर्घ चढ़ाया, गिरि सम्मेद शिखर को ध्याया।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भाद्रपदशुक्लाऽष्टम्यां पुष्पदंतनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन शुक्ला अष्टम आये, शीतल जिन वसु कर्म नशायें।
अष्ट मूलगुण के तुमधारी, भविजन आये शरण तुम्हारी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां शीतलनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौबोल छन्द)

अंतिम शुक्ल ध्यान को धारा, शेष अघाती कर्म नशे।
शिवथल गामी श्री श्रेयांस जिन, मोक्षपुरी में जाय बसे।।
श्रावण पूनम को हर प्राणी, मोक्ष सुपर्व मनाते हैं।
मोदक[1] अर्घ चढ़ाने प्रभु को, सम्मेदाचल जाते हैं।।11।।

1. निर्वाण लाडू।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रावणशुक्लापूर्णिमायां श्रेयांसनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य-भाव-नोकर्म नशाकर, वासुपूज्य ने मोक्ष लहा।
अग्नि कुमार विनय से आकर, नख केशों को पूज रहा।।
चम्पापुर निर्वाण भूमि में, सुरपति मोदक ले आये।
भादो शुक्ला चौदस के दिन, मोक्ष महोत्सव करवाये।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां वासुपूज्यनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म मलों के पूर्णनाश हित, विमलनाथ ने ध्यान धरा।
वदि आषाढ़ अष्टमी के दिन, प्रभु ने शिवपुर धाम वरा।।
अष्ट मूलगुण धारी प्रभु को, उत्तम अर्घ चढ़ाते हैं।
मोक्ष महा मंगल फल पाने, प्रभु चरणों में आते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आषाढ़कृष्णाऽष्टम्यां विमलनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुःख अनंत को नाश नाथ ने, सुख अनंत को प्राप्त किया।
श्री अनंत ने गुण अनंत को, आत्म भुवन में व्याप्त किया।।
हम लाडू व अर्घ सजाकर, श्री जिन के गुण गाते हैं।
चैत्र कृष्ण मावस के दिन हम, मोक्ष सुपर्व मनाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां अनंतनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेष कर्म को नाश प्रभु ने, मोक्ष महल में वास किया।
धर्मनाथ ने आत्मधर्म से, आत्मधर्म में वास किया।।
आत्म सार के इच्छुक भविजन, लड्डू श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
शुक्ला जैठ चतुर्थी को हम, प्रभु गुण गाथा गाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्येष्ठशुक्लाचतुर्थ्यां धर्मनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शंभु छंद)

श्री शांति अघाति कर्म नशा, सम्मेदाचल से सिद्ध बने।
नौ सौ मुनिवर भी उस दिन ही, वसुकर्म नाश श्री सिद्ध बने।।

शुभ ज्येष्ठ श्याम चौदस तिथि को, जिनवर ने जग को त्याग दिया।
हमने मोदक के थाल चढ़ा, उनके गुण में अनुराग किया।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां शांतिनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथु जिन सह मुनि इक हजार, अविचल सुख का आनंद लिया।
वैशाख शुक्ल एकम के दिन, शाश्वत निज परमानंद पिया।।
सम्मेद शिखर मुक्ति स्थल में, सौधर्म चरण रचना करते।
हम कूट ज्ञानधर जाकर के, लाडू ले प्रभु अर्चा करते।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वैशाखशुक्लाप्रतिपदायां कुंथुनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि चैत अमावस प्रत्यूषा[1], अर जिन वसु कर्म रिपू नशते।
मुनि इक हजार सह निज तन तज, तीर्थंकर सिद्धालय बसते।।
सौधर्म हाथ ले वज्रदण्ड, प्रभु चरण पुनीत[2] रचाते हैं।
त्रिभुवन के सुर-नर लाडु ले, सब मोक्ष सुमंगल गाते हैं।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां अरहनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा पंचम के दिन, मल्लीश्वर योग निरोध किया।
संग पाँच शतक मुनिराजों ने, वसु कर्मों का अवरोध किया।।
प्रभुवर के शिवपुर जाते ही, देवों ने जय-जयकार किया।
मोदक युत अर्घ चढ़ाकर के, हमने शिवसुख उपहार लिया।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री फाल्गुनशुक्लापंचम्यां मल्लिनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत ने सम्मेद शिखर, निज शेष कर्म को नाश किया।
फाल्गुन कृष्णा बारस प्रदोष, शाश्वत शिवपुर में वास किया।।
अग्नि कुमार सुर ने आकर, नख केशों का संस्कार किया।
शचि सुर-नर ने प्रभु भक्ति रचा, जिनवर का जय-जयकार किया।।20।।

1. ब्रह्ममुहूर्त, 2. पवित्र।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री फाल्गुनकृष्णाद्वादश्यां मुनिसुव्रतनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमि ने वसु कर्म नशाने को, अंतिम अघहारी ध्यान किया।
ह्रस्वाक्षर पंच नाद घटि में, अविचल शिवनगर प्रयाण किया।।
जिनवर संग एक हजार श्रमण, उनने कर्मों का क्लेश हरा।
चौदस कृष्णा वैशाख दिवस, हमने गुणगान विशेष करा।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यां नमिनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आषाढ़ शुक्ल सप्तम् प्रदोष, नेमी जिन कर्म प्रदोष हने।
संग पाँच शतक छत्तीस मुनि, श्रम कर प्रभु सह निर्दोष बने।।
सुर सेना ने गिरनार शिखर, प्रभु का शिव पर्व मनाया था।
लाडू ले मनहर अर्घ चढ़ा, हर घर में दीप जलाया था।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आषाढ़शुक्लासप्तम्यां नेमिनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोच्च ध्यान धर पारस ने, सम्पूर्ण कर्म का नाश किया।
श्रावण सुदि सात प्रदोष काल, लोकाग्र क्षेत्र में वास किया।।
जिनवर सह छत्तिस श्रमणों ने, परमौदारिक तन छोड़ दिया।
हमने मोदक मय अर्घ चढ़ा, दुनिया से निज मन मोड़ लिया।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रावणशुक्लासप्तम्यां पार्श्वनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदि मावस प्रत्यूषा, सन्मति जिन ध्यान कृपाण धरें।
पावापुरी में वसु कर्म नशा, श्री वर्द्धमान शिव थान वरें।।
तब गणधर सुर नर नारी ने, मोक्षोत्सव पर्व मनाया था।
दीपावली घर-घर में करके, शिव मोदक[1] थाल चढ़ाया था।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कार्तिककृष्णाऽमावस्यायां महावीरनाथस्य मोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. निर्वाण लाडू।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

आदी चौदह दिन पूर्व तजें, उपदेश गमन वा धर्म सभा।
सन्मति तेरह दिन शेष सभी, इक माह पूर्व तज तीर्थ प्रभा।।
ऋषभेश्वर नेमी वासुपूज्य, पर्यंकासन से कर्म नशें।
अवशेष सभी तीर्थंकर जिन, कायोत्सर्गासन मोक्ष बसें।।
उपसर्ग सुपारस पारस वा, अतिवीर तीर्थकर पर आया।
तीर्थंकर कष्टद काल वही, हुंडावसर्पिणी कहलाया।।
जो तीर्थंकर जिस काल क्षेत्र, अक्षय शिव सदन रमा पायें।
हम लाडू संग पूर्णार्घ चढ़ा, जिन सम अविनश्वर सुख पायें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां मोक्षकल्याणकेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– आठों कर्म निवार जिन, पायें शांति अपार।
सर्व जगत् की शांति हित, अर्पित शांति धार।।

शांतये शांतिधारा।

बेला पद्म गुलाब वा, विविध पुष्प के हार।
अर्पित श्री जिन पाद में, शीघ्र करो उद्धार।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य : ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरमोक्षकल्याणकेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– जिस दिन प्रभु शिव सुख वरे, पूज्य तीर्थ वह काल।
मोक्ष कल्याणक पर्व की, गायें हम जयमाल।।

(सखी छंद)

जय भरत क्षेत्र के सारे, चौबीस जिनेश हमारे।
उनकी जयमाला गायें, शिव मंगल दिवस मनायें।।1।।

जिन पंचकल्याणक धारी, तीर्थंकर धर्म प्रचारी।
वीरान्त वृषभ जिन आदी, हरने निज कर्म उपाधी।।2।।

निज समोशरण विघटाया, प्रभु योग निरोध रचाया।
फिर अन्तिम ध्यान लगाया, कर्मों का बंध छुड़ाया।।3।।

तज परमौदारिक काया, लोकाग्र शिवालय पाया।
सर्वोच्च सिद्ध पद पायें, जो भव्यों को ललचायें।।4।।

बाकी नख केश रहे जो, इस जग को पूत करे वो।
अग्नीन्द्र विनय से आये, अग्नि संस्कार कराये।।5।।

शचिपति सुर सैन्य सजायें, जिन मोक्ष कल्याण मनायें।
शिव मोदक सरस बनायें, अर्पित कर मोद मनायें।।6।।

जिनवर के चरण बनाये, औ थापन कर हर्षाये।
सुर मोक्ष तिथि पर आयें, प्रभुवर की भक्ति रचाये।।7।।

कैलाश वृषभ स्वामी ने, चंपापुर वासु प्रभो ने।
गिरनार नेमि जिन स्वामी, पावापुर वीरा स्वामी।।8।।

तीर्थंकर बीस हमारे, गिरीवर से मोक्ष पधारे।
उन संग जितने मुनि ज्ञानी, पाये थे शिव रजधानी।।9।।

हम उनको अर्घ चढ़ायें, निर्वाण धाम को ध्यायें।
'गुप्ति' त्रय गुप्ती पाये, जिन सम शिवसुख पा जाये।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां मोक्षकल्याणकेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

श्री पंचकल्याणक महोत्सव भक्ति से हम सब करें।
कल्याण की शुभ भावना से नृत्य वंदन हम करें।।
तीर्थंकरों की चरण रज मिलती रहे यह भावना।
मुझ 'गुप्तिनंदी' की रहे शिवराज की शुभकामना।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

वृहद् जयमाला

दोहा– जिनवर की जयमाल की, महिमा अपरम्पार।
चौबीसों तीर्थेश जी, धर्म तीर्थ आधार।।

(शंभु छंद)

जय भरतक्षेत्र के आदीश्वर, सन्मति पर्यंत जिनेश्वर की।
जय जगद्गुरु त्रय जगपालक, त्रिभुवन पूजित विद्येश्वर की।।
जिन गर्भागम छह माह पूर्व, धनराज[1] रत्न बरसाता है।
रवि चन्द्र नील वैडूर्य आदि, नाना मणि रत्न लुटाता है।।1।।

पन्द्रह महीने चौदह करोड़, जन्मोत्सव तक वे रत्न गिरें।
सुख दाता के आगमन पूर्व, हर पुर परिजन के भाग्य फिरे।।
सुरपति से प्रेरित धनपति भी, जिन नगर भव्य निर्माण करे।
वास्तु कुमार सुर भावों से, श्री नगर सृजन अभियान करे।।2।।

श्री आदि सुरेन्द्र प्रेरणा से, जिन मात गर्भ शोधन करती।
छप्पन कुमारिकायें भी आ, माता का मन रंजन करती।।
गर्भोत्सव से कुछ समय पूर्व, जिनमात स्वप्न सोलह देखें।
तीर्थंकर तब गर्भस्थ होय, ऐसा जिनआगम उल्लेखे।।3।।

जिन जननी आ जिनपालक से, स्वप्नों के फल को पूछ रही।
संकेत प्राप्त आ सुर सेना, जिनमात-पिता को पूज रही।।
प्रभु धरते मति-श्रुत-अवधि ज्ञान, गर्भस्थ काल में निश्चय से।
माता पुनि विद्यावान हुई, गर्भस्थ नाथ के अतिशय से।।4।।

छप्पन कुमारि कृत गूढ़प्रश्न[2], जिनमात सहज सुलझाती है।
वसु दिक्कुमारि कृत सेवा से, माँ की आभा बढ़ जाती है।।
तीर्थंकर जिन का जन्मोत्सव, त्रिभुवन को अतिशय का दाता।
सिंह शंखनाद कहिं वाद्य बजे, सुरपति का आसन कम्पाता।।5।।

1. कुबेर। 2. रहस्यमयी प्रश्न।

तब सुरपति ऐरावत गज ले, वैभव युत सुरसेना लाये।
लख योजन का ऐरावत गज, अठ मुख बत्तीस सूंड पाये।।
प्रत्येक सूंड पर ह्रद[1] पंकज, उस पर नाचें सुर ललनायें।
रजताभ[2] गजेन्द्र प्रदक्षिण दे, निज भव-भव के अघ विनशाये।।6।।

इन्द्राणी जाय प्रसूति गृह, जिन बालक लख हर्षाय रही।
पुनि अवलोके कह धन्य-धन्य, शुचि सम्यक्दर्शन पाय रही।।
तीर्थंकर शिशु को गोद लिए, नर्तन कर सुरपति को देती।
पा प्रथम दर्श तीर्थंकर का, सौधर्म पूर्व शिव[3] वर लेती।।7।।

सौधर्म नाथ को गोद लिए, ऐशान छत्र प्रभु पर ताने।
सानत्कुमार माहेन्द्र स्वयं, ले चंवर युगल निज अघ हाने।।
सब मेरू शिखर पर जा पहुँचे, अंतर्मुहूर्त में सुर सारे।
सिंहासन पर प्रभु को बैठा, अभिषेक मंत्र सब उच्चारे।।8।।

सौधर्म शची निज परिकर सह, इक साथ जन्म अभिषेक करें।
मेरु क्षीरोदधि एक हुआ, ऐसा आगम उल्लेख करे।।
अभिषिक्त दिव्य गंधोदक से, शचि सुरपति मिल करते होली।
कर नृत्य देव-देवी उसमें, भरते निज अक्षय सुख झोली।।9।।

सुरभित द्रव्यों का लेप शची, प्रभु के सुरभित तन पर करती।
कुंडल किरीट मणिमाला वा, वस्त्राभूषण शोभित करती।।
अतिशय सुन्दर प्रभु मुद्रा लख, निज नेत्र हजार बनाये थे।
अपलक जिन रूप लखे सुरपति, पर तृप्त नहीं हो पाये थे।।10।।

शचिपति ने बाल तीर्थंकर की, अर्चाकर सौंपा अम्बे को।
फिर आनंद ताण्डव नृत्य किया, जग पूजे जिन पितु अम्बे को।।
तीर्थंकर शिशु की सेवा में, निश्चित कर देव देवियों को।
जिन गुण निधि वरने का अवसर, सुरपति दे धर्म सेवियों को।।11।।

---

1. सरोवर, 2. चाँदी जैसी आभा वाली, 3. मोक्ष।

तीर्थेश सहज हैं स्वयंबुद्ध, बिन गुरु वे जग के गुरु बनते।
जिन बाल सुलभ लीलाओं से, सुख ज्ञान सुधा झरने झरते॥
स्वर[1] में मणि निर्मित मानखंभ, वहाँ रत्नज भव्य पिटारे हैं।
जिससे सुर प्रभु वय रूप योग्य, वस्त्राभूषण ले आते हैं॥12॥

तीर्थंकर का राज्याभिषेक, आ शक्र[2] स्वयं ही करवाता।
वात्सल्यउदधि में डुबकी ले, सुख समता घट भर ले जाता॥
जिनवर को जब वैराग्य जगे, लौकांतिक सुर आ अनुमोदें।
सब प्राणी से धर क्षमाभाव, प्रभु पुर परिजन को सम्बोधें॥13॥

नर-खगचर-सुर क्रम से बढ़कर, जिन शिविका[3] को वन में लाये।
तब नमः सिद्ध कहकर स्वामी, लोचन कर संयम अपनायें॥
तीर्थंकर मुनि उस क्षण में ही, सब ऋद्धि-सिद्धिधर बन जाते।
जिस घर में प्रभु आहार करें, तहँ अचरज पाँचों हो जाते॥14॥

श्रेणी चढ़ ध्यानानल प्रगटा, प्रभु घाति कर्म को विघटाया।
तब अक्षय अनुपम आत्मजन्य, कैवल्य सूर्य को प्रगटाया॥
लाभान्तराय क्षय करने से, प्रभु त्रिभुवन स्वामी कहलाये।
दानान्तराय नश जाने से, जिन अक्षय दानी बन जाये॥15॥

धनपति शुभ समोशरण रचकर, त्रिभुवन पति योग्य पुण्य पाये।
सुरपति जिसकी अर्चा करके, भारी अचरज में पड़ जाये॥
भू से ऊपर धनु पाँच सहस, प्रभु कमलासन तज अधर रहें।
जिनके सर्वात्म प्रदेशों से, अनमोल ज्ञान घन निकल रहे॥16॥

श्री जिन विहार में स्वर्ण कमल, सुर वसु[4] दिश में रचते जाते।
प्रभु सात शतक अठदश भाषी, निरपेक्ष मोक्ष पथ बतलाते।
शरणागत भव्य समूहों में, सम्यक् श्रुत दीपक जल जाते॥
जिस-जिस दिश में प्रभु चरण पड़े, तहँ भवि अघ से बचते जाते॥17॥

1. स्वर्ग, 2. इन्द्र, 3. पालकी, 4. आठ।

जो दृढ़ मन से प्रभु भक्ति करे, वो मनवांछित सुख पा जाये।
गूंगा बोले लंगड़ा दौड़े, निर्धन भी धन सुख पा जाये।।
रोगी निरोग जड़ ज्ञानवान, रागी विरागमय हो जाते।
लोभी अलोभ मोही विमोह, बालक भी शिवसुख को पाते।।18।।
जिनवर जब योग निरोध करें, तब समोशरण विघटाया है।
सब भव्य जीव नतशिर बैठे, मन में प्रभु रूप समाया है।।
ह्रस्वाक्षर पंच नाद घटि में, प्रभु कर्मन् पिण्ड जलाते हैं।
परमौदारिक तन को तजकर, अविराम सिद्ध पद पाते हैं।।19।।
प्रभु तन विलीन कर्पूर भाँति, नख केशमात्र रह जाते हैं।
सुरपति अग्नीन्द्र देव द्वारा, उसका संस्कार कराते हैं।।
तीर्थंकर की अग्नि पवित्र, त्रय काल सदा पूजी जाती।
उनके पाँचों कल्याणक की, तिथि वा भूमि पूजी जाती।।20।।
प्रभु के पाँचों कल्याणक हम, नित प्रति श्रद्धा से ध्याते हैं।
प्रभु गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-मोक्ष, पाँचों को अर्घ चढ़ाते हैं।।
हे नाथ ! आप गुण मणियों का, जिन भक्त सदा शुभ ध्यान धरें।
प्रभु गुण गाकर 'गुप्तिनंदी', जिन सम निज का कल्याण करें।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां पंचकल्याणकेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

श्री पंचकल्याणक महोत्सव भक्ति से हम सब करें।
कल्याण की शुभ भावना से नृत्य वंदन हम करें।।
तीर्थंकरों की चरण रज मिलती रहे यह भावना।
मुझ 'गुप्तिनंदी' की रहे शिवराज की शुभकामना।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

प्रशस्ति

(शंभु छंद)

मैं पंच परम परमेष्ठी वा, श्री श्रुतदेवी को नमन करूँ।
गणधर वा पूर्वाचार्यों को, नित नमन करूँ अघ वमन करूँ॥
इस भरत क्षेत्र में इस युग में, वृषभादि वीर तीर्थेश हुए।
उनके कुल चौदह सौ बावन, ऋद्धिधर श्रेष्ठ गणेश हुए॥1॥

महावीर प्रभु के शासन में, श्रुत लेखक बहु आचार्य हुए।
श्री भद्रबाहु धरसैनादिक और कुन्दकुन्द आचार्य हुए॥
उनकी परम्परा अक्षयशः, महावीरकीर्ति गुरु तक आयी।
उनने बहु दीक्षायें देकर, मुनिद्रुम की शाखा फैलायी॥2॥

उनके अनुचर कुन्थुसिन्धु, मम दीक्षा गुरु आचार्य बनें।
उनसे दीक्षित श्री कनकनन्दी, मम शिक्षा गुरु आचार्य बनें॥
द्वय गुरु की दीक्षा शिक्षा ने, मेरा निश्चय उद्धार किया।
निज सम आचार्य बना गुरु ने, पुनि-पुनि मुझ पर उपकार किया॥3॥

गणिनी राजश्री अम्ब रचित, श्री गणधर वलय महा पूजा।
अतिशीघ्र जगत् विख्यात हुआ, उसके सम ग्रन्थ नहीं दूजा॥
उसके सम्पादन का सुयोग, मुझ अल्प बुद्धि मुनि ने पाया।
निज संघ सृजन कुछ ग्रन्थ सृजन, उस शुभ फल से ही कर पाया॥4॥

श्री रत्नत्रय विधान वृहत्, श्री नवग्रह शांति विधान रचा।
श्री मज्जिन पंचकल्याणक शुभ, आतम हित श्रेष्ठ विधान रचा॥
गणिनी राजश्री माता ने, इसका सम्पादन सरल किया।
रस छन्द अलंकारों द्वारा, हर कृति को सुन्दर सरल किया॥5॥

रवि शशि जब तक नभ में विचरे, तब तक यह श्रेष्ठ विधान रहे।
इससे जिनबिम्ब प्रतिष्ठा हों, श्री जिन के पंचकल्याण रहे॥

निज कर्म नाश, शिव सदन वास, बोधी समाधि का लाभ मिले।
मुझ 'गुप्तिनंदी' की आस यही, जिन भक्ति में यह कलम चले॥6॥

दोहा– अल्प बुद्धि मुझको नहीं, छन्द काव्य का ज्ञान।
भक्ति भाव के वश लिखा, पंचकल्याण विधान॥
रत्नत्रय विधान सम, है इसका इतिहास।
शोध बोध जिन भक्ति कर, पाओ मोक्ष निवास॥

***

श्री पंचकल्याणक विधान आरती

(तर्ज : तन डोले मेरा मन डोले...)

जयकार करें, आशीष मिलें, श्री तीर्थंकर भगवान की।
हम करें सभी मिल आरतियाँ...

गर्भ–जन्म–तप–ज्ञान मोक्ष ये, पंचकल्याणक न्यारे।
मणिमय रजत सुवर्ण दीप के, थाल सजा मनहारे॥
आरती करते, भक्ति करते, प्रभु पंचकल्याणक नाथ की॥1॥ हम...

वृषभादि महावीर जिनेश्वर धर्म तीर्थ दातारी।
हीरे मोती आदि जड़ित की दीपमालिका प्यारी॥
कीर्तन करते, पूजन करते श्री जगत्पिता गुणखान की॥2॥ हम...

जिन आराधक बनकर हम सब, इस विधान में आये।
'राजश्री' निज कर्म नशाने, जिनवर के गुण गाये॥
हम ध्यान करें, नित जाप करें, जिनशासनपति भगवान की॥3॥ हम...
हम करें सभी मिल आरतियाँ...

***

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी

अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पद्मपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रान्ते–नगरे..... मासानांमासे.....मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट–यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥

आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥

छत्र चँवर भामंडल चम–चम, देव–दुंदुभि बजती दुम–दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥

आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ॥5॥
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक॥1॥
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान॥2॥
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द॥3॥
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट-दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

अतिशय क्षेत्र धर्मतीर्थ, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) द्वारा

आर्ष मार्ग संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य

श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री वृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री वृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री वृहद नवग्रह शान्ति विधान
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री पंच परमेष्ठी (सर्व सिद्धि) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान

31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री जिन सहस्त्रनाम विधान
39. श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान
40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान
42. श्री सर्व दोष प्रायश्चित्त विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्ठी व्रत विधान
47. आचार्य शांतिसागर विधान
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनकनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छयानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी (आचार्य श्री कनकनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति (गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)